मूल्य रु. ५-०० मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १२० • अप्रैल-२०१७

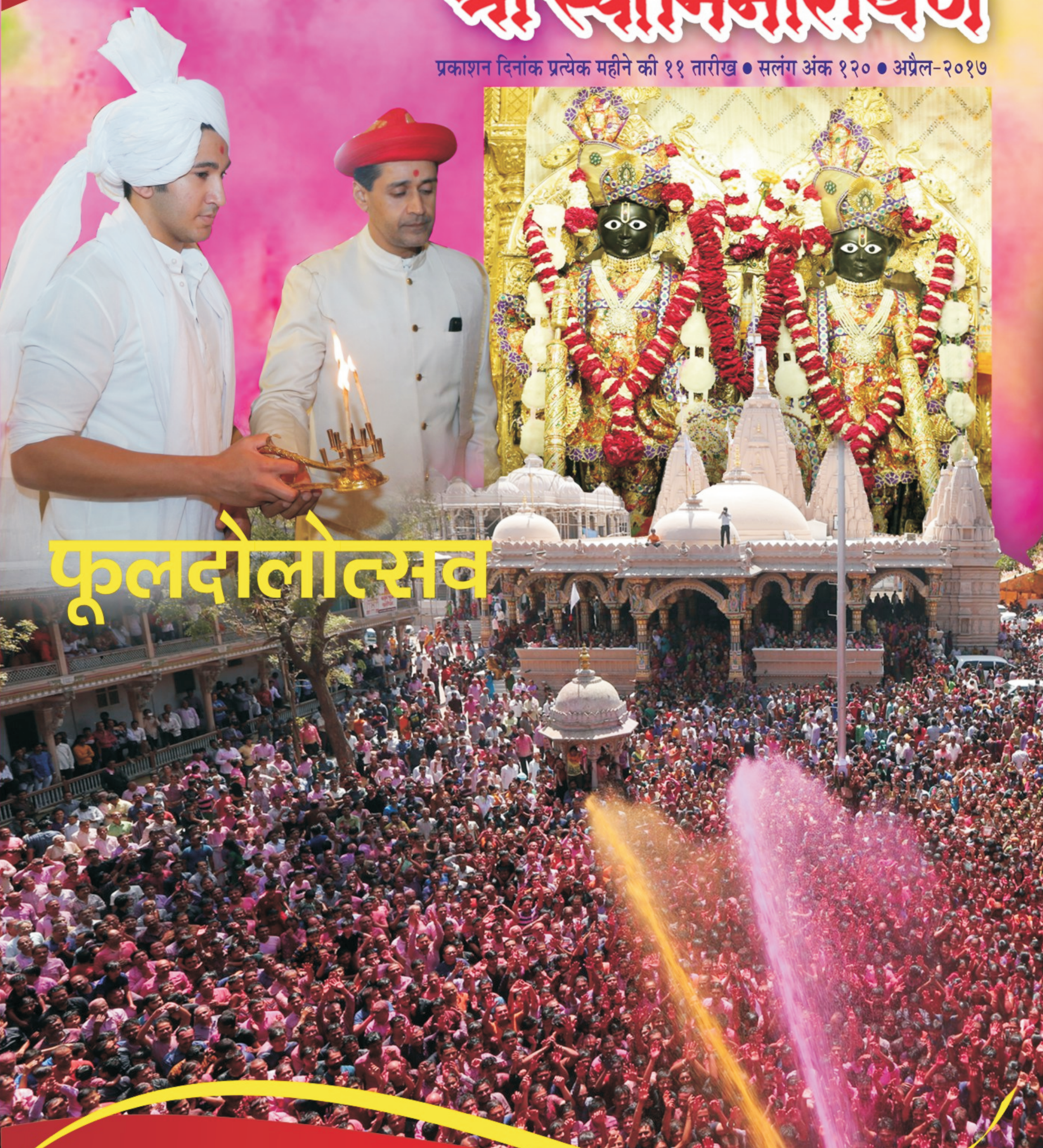

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

1

2

3

(१) जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजका १९१ वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन। (२) मोरबी मंदिर के दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये तथा सभा में यजमान परिवार का सन्मान करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री।

(३) एप्रोच (बापूनगर) मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प्रासंगिक सभा में संत तथा हरिभक्त।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : १२०

अप्रैल-२०१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	करांची	०६
०४.	सुमधुर	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुखों के सुखद कल्याणकारी अमृतवचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	१६
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२१

अस्मदीयम्

भगवान ना अवतार तो पोताना एकान्तिक भक्तजनना जे धर्म तेने प्रवर्तावावाने अर्थे थाय छे । अने वडी जे एकान्तिक भक्त छे तेने देहे करीने मरवुं ए मरण नथी । एने तो एकान्तिक धर्ममांथी पडी जवाय एम मरण छे । ते ज्यारे भगवान के भगवानना संत तेनो हृदयमां अभाव आव्यो त्यारे ए भक्त एकान्तिक ना धर्ममांथी पड्या जाणवो । अने ते जो क्रोधे करी ने पड्या होय तो तेने सर्प नो देह आव्यो जाणवो । अने कामे करीने पड्या होय तो यक्ष-राक्षसनो अवतार जाणवो । माटे जे एकान्तिक धर्ममांथी पडीने एवा देहने पाम्यो छे ते जो धर्मवाला होय अथवा तपस्वी तो पण ते धर्मे करीने तथा तपे करीने देवलोकमां जाय, पण जेने भगवानना संतनो अभाव लीधो ते तो भगवानना धामने तो जन पामे । अने वडी जे पंच महापापे युक्त होय अने तेने भगवानने भगवानना संतने विषे अवगुण न आव्यो होय, तो एना पाप नाश थई जाय, ने एनो भगवानना धाममां निवास थाय । माटे पंच महापापथकी पण भगवानने भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो एवो मोटु पाप छे ।(व.ग.म.४६)

प्रिय भक्तो ! अपने में भगवान का या भगवान के भक्त का कभी अवगुण नहीं आना चाहिए । हमें तो अक्षरधाम में जाना है । थोडे ही समय में कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के मंदिर का कार्य पूर्ण होने वाला है, जिस में राजस्थान के गुलाबी बंसी पहाड का पत्थर तथा मकराणा मार्बल से जीर्णोद्धार का काम किया जा रहा है । ता. ३१-५-१७ से ता. ४-६-१७ तक श्री घनश्याम महोत्सव समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया जायेगा । समग्र सत्संग को इस का अलौकिक लाभ लेने के लिये हमारा हार्दिक आमंत्रण निमंत्रण है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१७)

१ परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद् हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये ।
२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा तथा साचोदर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
४ श्री स्वामिनारायण मंदिर रणमलपुर (मूली देश ता. हलवद) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१२ प.भ. ईश्वरभाई हीरजीभाई पूंजाणी के यहाँ अदाणी शांतिग्राम में पदार्पण ।
१३ श्री नरनारायणदेव जयंती फूल दोलोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।
१४ से २८ अमेरिका शिकागो में आई.एस.एस.ओ. आयोजित कोन्फरन्स में पदार्पण ।
३० श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
३१ भुज-कच्छ तथा अन्जार-कच्छ श्री स्वामिनारायण मंदिर पदार्पण ।

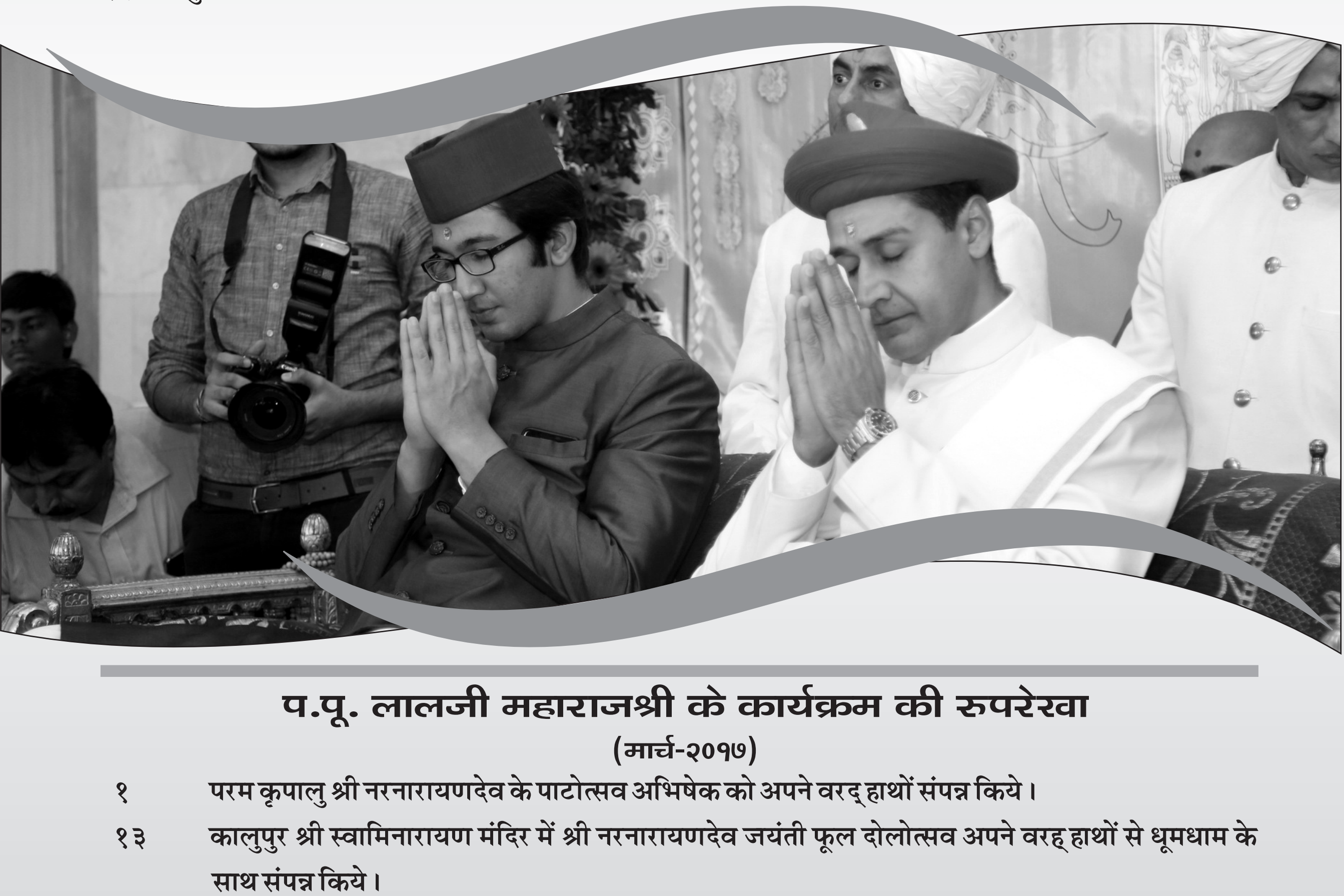

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१७)

१ परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव अभिषेक को अपने वरद् हाथों संपन्न किये ।
१३ कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती फूल दोलोत्सव अपने वरह् हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये ।
१५ से २२ शिकागो अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. के कोन्फरन्स में पदार्पण ।

करांची

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

राजकोट के मावाभाई अच्छे सत्संगी थे । परंतु व्यवहार बडा कमजोर था । एकवार संतो का मंडल राजकोट गया । उस समय भक्त के मन में हुआ कि संतो को भोजन कराउँ इसलिये जाकर निमंत्रण दे आये । लेकिन घरकी स्थिति अच्छी नहीं थी । अब विचार करने लगे कि क्या करें ? तो अपने घर के आभूषण गिरवी रखकर सीधा सामान घर ले आये । उसी में से संत भोजन बनाये और ठाकुरजी का भोग लगाये । सभी संतो की पूजा किये । उस में से सभी से जो बड़े संत थे उन्होंने अन्य संतो से कहा कि भक्त की स्थिति अच्छी नहीं है, इसलिये अपने घर का आभूषण गिरवी रखकर हम सभी को भोजन कराये हैं, इस लिये आप सभी भगवान स्वामिनारायण से प्रार्थना करने के लिये अभी एक एक माला करिये, जिससे इनका आभूषण वापस आ जाय और ये सुखी हो जांय । ऐसा सभी ने किया ।

कुछ समय के बाद करांची बंदर गाह से कोन्ट्राक्टर का काम करने वाले सत्संगी रणछोडभाई मिस्त्री राजकोट आये और अपने साथ मावजीभाई भगत को अपने साथ करांची ले गये । दोनो मिलकर उस कार्य का विस्तार किये । थोडे ही वर्षो में खूब धन कमाये । अंग्रेज गवर्नर के खूब वफादार होने से नाम भी कमाये और दाम भी कमाये । एकबार रणछोडबाई मिस्त्री तथा मावाभाई मिस्त्री अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आये । उस समय प.पू. आचार्यश्री केशवप्रसादजीने दोनो की कुशलता पूछी और अपनी वात अंग्रेज गवर्नर के सामने रखने के लिये भी कहे । उसमें ऐसा था कि यदि अंग्रेज सरकार जमीन दे तो करांची में बहुत बड़ा मंदिर बनायेंगे । आचार्य महाराजश्री की आज्ञा को मस्तक पर चढाकर करांची आये और अंग्रेज गवर्नर साहब को महाराजश्री की वात बताये । गवर्नर साहबने उसी समय करांची बंदगाह पर बहुत बडी तथा महत्वकी जमीन श्री नरनारायणदेव को लिखकर कृष्णार्पण कर दी ।

आचार्य महाराजश्री केशवप्रसादजी महाराजश्रीने संतो को करांची तुरंत भेंजा और वहाँ पर भव्य शिखरी मंदिर पत्थरों से तैयार करवा दिया । उसके भीतर आठसौ जितने सत्संगियो के लिये आवास बनवाये । रणछोडभाई तथा मावाभाई ने अपनी पूरी कमाई मंदिर के निर्माण में लगा दिये ।

मंदिर तैयार होते ही प.पू. आचार्य केशवप्रसादजी महाराजश्री के पास जो प्रसादी के वासन थे उसमें से विनगर के कंसाराओं के पास पंच धातु की अलौकिक नयन रम्य कुंजविहारी हरिकृष्ण महाराज की मूर्तियों को बनवाकर साधु सन्तो को साथ लेकर करांची पहुंच गये ।

विक्रम संवत १९३९ वैशाख शुक्ल पंचमी (सन् १८८६) के शुभ मंगल अवसर पर वेद विधिसे धूमधाम पूर्वक आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्रीने अपने हाथों प्राण प्रतिष्ठा विधिकिये । सात दिन का विष्णुयाग भी संपन्न हुआ । इस यज्ञमें स्वयं बैठकर प्रतिष्ठा को सम्पन्न किये थे । उस समय बहुत बड़ा उत्सव किया गया था । अनेकों देशों से सत्संगी तथा संत पधारे थे । मुख्य मंदिर में श्री कुंजविहारी हरिकृष्ण महाराज, सुख सैया

में एक चक्षु के सहजानंद स्वामी, तथा हनुमानजी गणपतिजी की खडी मूर्ति प्रतिष्ठान्वित किये थे ।

करांची शहर में रहने वाले सभी हिंदु धर्मावलम्बियो के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर आस्था का केन्द्र बन गया । अनेकों लोग स्वामिनारायण के सत्संगी बने ।

करांची मंदिर की आर्थिक प्रगति में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी संप्रदाय में अन्य मंदिरों की अपेक्षा वहाँ के मंदिर में आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ हो गई । अन्य मंदिरो में जहाँ आर्थिक स्थिति ठीक नही होती, वहाँ से धनकी पूर्ति की जाती । करांची मंदिर में प्रत्येक वर्ष वैशाख शुक्ल पंचमी को भव्य पाटोत्सव होता उस समय जो भी आचार्य होते वे वहाँ पर एक महीने तक रुकते । इसके अलांवा मंदिर की सेवा में अमदावाद से संतो को भेंजते ।

इ.स. १९४७ में भारत - पाकिस्तान के बटवारे के बाद-पाकिस्तान इस्लाम देश घोषित होने से वहाँ रहने वाले जो भी हिन्दु थे अपनी सुरक्षा के लिए भारत वापस आ गये । इसके अलांवा जो हिन्दु मंदिर के परिसर में रहते थे, जैन, सिंधी, पंचाबी वे वही रहना पसंद किये । करांची के हिन्दुओं के अन्य मंदिरो पर मुस्लिम आक्रमण करके कितने को जमीनदोस्त कर दिये तो कितनों पर मस्जित बना दिये । परंतु अपने मंदिर में कुछ नुकशान नहीं हुआ आज भी सुरक्षित है ।

इ.स. १९५२ के समय में एकबार अपने मंदिर में चारो तरफ से उग्रवादी लोग मंदिर पर कब्जा लेने के लिये चढाई किये । बड़े - बड़े हथियारधारी भीतर घुसकर सभी को कहे कि सभी बाहर निकल जाओ । लेकिन मंदिर में बिराजमान हुमानजी विकराल रुप धारण करके हाथ में गदा लेकर भयंकर आवाज करते हुये सभी को दिखाई दिये । वहाँ आये हुये सभी अपना हथियार फेंक कर अपनी जान बचाकर भाग निकले । यह घटना पूरे पाकिस्तान में फैल गई । उस समय से आजतक अपने मंदिर पर कोई हमला नहीं किया ।

मंदिर की सुरक्षा सरकार के अधीनस्थ होने से तत्कालीन वहाँ के प्रधान मंत्री झीणा ने मंदिर को सरकार को दे दो इसके बदले में अमदावाद के माणेक चौक में आई हुई रानी की हजीरा देने के वात की थी । परंतु तत्कालीन आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स्पष्ट मना कर दिया । किसी धर्म स्थान को सम्पत्तिके साथ बराबरी नहीं की जा सकती ।

पाकिस्तान में संतो को आने जाने में तकलीफ होती थी इस लिये आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से उस समय के महंत पुराणी स्वामी घनश्यामचरणदासजी (टोकरी स्वामी) मूर्तियों का उत्थापन करवाकर श्री कुंजविहारी हरिकृष्ण महाराजश्री मूर्ति को एरोप्लेन से अमदावाद लाया गया । सुख शैया की मूर्ति को मुख्य मंदिर में रखकर पूजा चालू रखी गयी थी । हनुमानजी -

गणपतिजी की मूर्ति यथावत रखी गई ।

करांची मंदिर की संपत्ति स्थावर - जंगम आज भी श्री नरनारायणदेव गादी आचार्यमहाराजश्री के नाम से चलती है ।

इस समय वहाँ पर रहने वाले हिन्दु भक्तों की एक टीम कमेटी बनाकर मंदिर की सेवा पूजा तथा व्यवस्थापन का कार्य किया जा रहा है । पाकिस्तान के कितने बिजा के नियमों के कारण आने जाने में अडचन आती है । परंतु आचार्यश्री अपने प्रतिनिधिकों भेंजकर मंदिर की देखरेख कराते रहते हैं । वहाँ रहने वाले हिंदु यदा कदा बड़े उत्सव करते हैं । इसके अलांवा पंचदेवों की भी स्थापना हुई है ।

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ वसन्ततिलकावृत्तम् ॥

श्रीवासुदेवइहभारतजीवलोकक्षेमायनिर्जरॠषिः करुणानिधिस्त्वं ।
आकल्पमाचरतितीव्रतपांसि तं त्वां नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥१॥
श्रीनारदादिमुनिण्डलसेवितांघ्रि निर्नीडगाढदलसंकुलितां विशालाम् ।
अध्यास्यवेदहृदयस्यनिरूपकंतंत्वा नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥२॥
देवांगनागणवसन्तसुगन्धिवातैर्युक्तः सुराधिपतिमोहकगायकौघैः ।
कामोऽपि येन सहसा विजितश्च तं त्वां नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥३॥
यन्मानसंजिततपस्विगणौपिरोषः स्प्रष्टुंकथंचन कदाचनना॒पशक्तिम् ।
तं त्वां च बिभ्यतियतान्तरवैरिणोऽन्ये नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥४॥
त्वां पूर्णकामपतिरप्यनुवासर स्वं दैवं च पित्र्यमपिकर्मकरोषिकाले ।
संग्राहयन्नखिलनैष्ठिकविर्णिनस्त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ॥५॥
यस्मात्प्रवर्त्तत इहाखिलमसौख्यहेतुः सच्छास्त्रवृन्दमखिलं खलुनैष्ठिकेन्द्रात् ।
यत्कर्मदुष्करममर्त्यगणैश्च तं त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ॥६॥
ये ये निवृत्तिमुपयान्तिविरागवेगात्संसारभीति जनितादधिभूमि ते ते ।
यस्याश्रयेणसुखिनोऽत्र भवन्ति तं त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ॥७॥
यत्पादपद्मकरन्दसैकलुब्धौ ब्रह्माण्डसौख्यमखिलं हि कदाचिदेव ।
रंकोपिनेच्छन्ति सुखाम्बुधिमेव तं त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ॥८॥

॥ इति सत्संगिजीवनस्थ नारायणाष्टकम् ॥

श्रीमद् सत्संगिजीवन धर्मशास्त्र की रचना करने वाले महामुनि शतानंद स्वामी का जन्म उत्तर भारत के पाटली पुत्र वर्तमान में पटना (विहार प्रान्त) में चारो वेद के ज्ञाता पवित्र कुल में विष्णु शर्मा नामक ब्राह्मण के घर में हुआ था । पिताने शतानंद नाम रखा पांच वर्ष के होने पर शतानंद का उपनयन संस्कार करवा दिये और पाठशाळा में वेदादि का अध्ययन करने के लिये पंडितो के पास वही रख दिये थोडे ही समय में धर्मशास्त्र इतिहास - पुराण समग्र शास्त्रों में प्रवीण हो गये । सभी शास्त्रो का दोहन रुप भागवत का विशेष चिन्तन किये उसमें भी दशम स्कन्धका तथा पंचम स्कन्धका विशेष चिन्तन और निर्णय किये कि यह मनुष्य जन्म बड़ा कठिन है, जो देवताओं को भी दुर्लभ है, हमे प्राप्त है यदि प्रत्यक्ष परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता तो भगवत् धाम की प्राप्ति हो जाती । वारंवार चौरासी लाख योनियों में आना जाना नहीं पड़ता । इस भयानक कलिकाल में साक्षात् श्री नरनारायणदेव का एक मात्र आश्रय करके संसार को नाशवंत समझकर उनका त्याग करके श्री नरनारायणदेव के स्वरुप की उपासना भक्ति करने से जीव का मोक्ष हो जायेगा । इस तरह दृढ निश्चय करके माता-पिता की आज्ञा लेकर तीर्थयात्रा के निमित्त घर छोड़कर निकल पडे । श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये वर्णीके जैसा वेष धारण करके बद्रीनाथ धाम में पहुंचकर श्री नरनारायणदेव की उपासना करने लगे । पवित्र गंगा में प्रतिदिन स्नान करके अर्चास्वरुप भगवान

बद्रीपति का प्रातः से रात्रि पर्यन्त जप करते करते छ मास वीत गये । प्रबोधनी एकादशी के दिन निर्जलव्रत करके रात्रि जागरण के साथ परमात्मा से प्रार्थना कर रहे थे । उसी सयम करुणा के सागर श्री नरनारायणऋषि अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन देकर वरदान मांगने को कहे तब शतानंद साष्टांग दंडवत प्रणाम करके कहने लगे कि हे प्रभु मैं आपके गुणों का गान करके अपनी वाणी को सार्थक करना चाहता हूँ । एकमात्र आपमें ही मेरी प्रीति रहे और जगत भी उससे अनुप्राणित रहे ऐसे ग्रंथ की रचना करने की इच्छा है । जो जीव आपका आश्रय करेगा उसका अवश्य कल्याण होगा । जो आपके सर्वोपरिभाव को समझेगा उसी का कल्याण होगा । शतानंद की ऐसी स्तुति सुनकर भगवान श्री नरनारायण ऋषि प्रसन्न होकर कहे हे शतानंद । इस समय उत्तर कोशलदेश में मनुष्य देह धारण किये हुये प्रभु जो सौराष्ट्र में श्रीहरि केनाम से प्रसिद्ध होंगे । वहीं आप जाइये मैं ही उस रुप में रहूंगा उन्हीं के पास रहकर ग्रन्थ पूरा कीजिये उसी से आपकी मनोकामना पूर्ण होगी । श्री नरनारायणदेव की स्तुति जो किये वह नीचे प्रस्तुत है ।

श्री शतानंद मुनि श्रीमद् सत्संगिजीवन धर्मशास्त्र में श्री नरनारायणदेव की स्तुति इस अष्टक के रुप में किये हैं ।

श्रीवासुदेवइहभारतजीवलोकक्षेमायनिर्जरऋषिः करुणानिधिस्त्वं ।
आकल्पमाचरतितीव्रतपांसि तं त्वां नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥१॥

हे प्रभु सर्वत्र व्यापक सभी में अन्तर्यामी के रुप में वास करने वाले है । करुणा के सागर आप भरत खंड में रहनेवाले जीव मात्र का कल्याण करने के लिये श्री नरनारायण के रुप में कल्प पर्यन्त ज्ञान-वैराग्यादि से युक्त होकर तप करते हैं मुनियों मैं श्रेष्ठ ऐसे बद्रीपति की मैं प्रार्थना करता हूँ ॥१॥

श्रीनारदादिमुनिण्डलसेवितांघ्रि निर्नीडगाढदलसंकुलितां विशालाम् ।
अध्यास्यवेदहृदयस्यनिरूपकंतंत्वा नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥२॥

श्री नारदादि सनकादिकुमार तथा उद्धवादि मुनियों के द्वारा सेवित है चरण युगल जिसके तथा गाढे बादल के समान छाया होते हुये भी जिसमें पक्षियों ने अपना घोषला नहीं बना पाया ऐसे स्वतंत्र पत्तों से युक्त विशाल नामक बदरी वृक्ष के नीचे बैठकर वेद के हृदय रुप रहस्यमय अर्थरुप ऐसी परा भक्ति का निरुपण करते है ऐसे हे नारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ॥२॥

देवांगनागणवसन्तसुगन्धिवातैर्युक्तः सुराधिपतिमोहकगायकौघैः ।
कामोऽपि येन सहसा विजितश्च तं त्वां नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥३॥

इन्द्रादिक देव तथा ऋषि मनियों को जो मोह में पैदा करदें ऐसी अप्सरायें तथा वसन्त ऋतुओं का मधुर मोहक गायन करने के लिये कामदेव को भी जिसने जीत लिया है ऐसे श्री नारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ॥३॥

यन्मानसंजिततपस्विगणौपिरोषः स्प्रष्टुंकथंचन कदाचनना्पशक्तिम् ।
तं त्वां च बिभ्यतियतान्तरवैरिणोऽन्ये नारायणं मुनिवरं बदरीशमीडे ॥४॥

बड़े बड़े तपस्वियों के समुदाय को भी जीतने वाले, क्रोधभी आपके मन को स्पर्श नहीं कर सकता ? अन्तः शत्रु भी आपसे डरते रहते हैं । ऐसे हे श्री नरनारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ॥४॥

त्वां पूर्णकामपतिरप्यनुवासर स्वं दैवं च पित्र्यमपिकर्मकरोषिकाले ।
संग्राहयन्नखिलनैष्ठिकविर्णिनस्त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ॥५॥

पूर्ण काम ऐसे जो मुक अक्षरमुक्त उनके आप स्वामी है, तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को अपने आचरण से शिक्षण देने के लिये समय - समय पर वर्णाश्रमो चित अपने दैव तथा पितृ संबंधी धर्म करते हैं । ऐसे हे श्री नरनारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ॥५॥

यस्मात्प्रवर्त्तत इहाखिलमसौख्यहेतुः सच्छास्त्रवृन्दमखिलं खलुनैष्ठिकेन्द्रात् ।
यत्कर्मदुष्करममर्त्यगणैश्च तं त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ॥६॥

(पेईज नं. १३)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुखों के सुखद कल्याणकारी अमृतवचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी - बापुनगर)

अमदावाद कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव का १९५ वाँ पाटोत्सव ता. १-३-१७ : शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी की प्रेरणा से प.पू. महाराजश्री के हाथों से यजमानों को तुलसी का वृक्ष तथा तुलसी की माला दी गई । इस नवीन अभिगम को देखकर महाराजश्री ने कहा कि यह अभिगम हमें बहुत अच्छा लगा । जो तुलसी के वृक्ष दिये गये हें वे भगवान श्री नरनारायणदेव को तुलसी की मंजरी के बीज में से तैयार हुये हैं अर्थात् वे प्रसादी के हैं । इसलिये उन्हें सुरक्षित जगह पर रखना । जब श्री नरनारायणदेव के दर्शन का समय न मिले, मंदिर नहीं आ सकें तो इन्ही तुलसी के वृक्षों का दर्शन करने से श्री नरनारायणदेव का दर्शन हो जायेगा । लेकिन दर्शन के समय श्री नरनारायणदेव का स्मरण होते रहना आवश्यक है । इसके साथ तुलसी से पर्यावरण की रक्षा भी होगी । यह मात्र यजमान को ही नहीं, सभी को दूंगा ।

हार देते है वह एक दिन ताजा रहता है, इसके बाद उसे कहाँ रखें इसकी भावना होती है, उसी के विकल्प में आप सभी को तुलसी की माला दी गई है उसे आप पहन भी सकते हों, गाडी में पहना सकते हों, खूंटी पर लटका सकते हो इससे जहाँ भी रखेंगे, उन सभी को सत्संग होगा । (मजाक में) आप माला नहीं फेरेंगे तो कोईबात नहीं आपकी पत्नी भी फेर सकती है उनका भी कल्याण होगा । हमारे निवास स्थान में प्रवेश द्वारा पर एक तरफ तुलसी का पेड लगाया था, बहुत प्रयत्न किये खादभी डाले फिर भी सूख गईं । बाद में गादीवालाजीने स्थान परिवर्तन किया, इससे तुलसी का वृक्षखूब हरा - भरा हो गया और विशाल भी । विचार करने की वात्त है कि ऐसा क्यों हुआ ? बाद में ख्याल आया कि जहाँ तुलसी के वृक्ष थे वहाँ पर चप्पल रखा जाता था । तुलसी भी देवता है, इसलिये उन्हें भी पवित्र जगह पर रखना चाहिये ।

कितने भक्तों को तो कोई स्थानो पर वारंवार मूर्ति भेंट में मिलती रहती है, इसमें प्रश्न होता है कि ए मूर्तियाँ कहाँ रखे ? इस विषय पर ऐसा निश्चित किया गया कि जिसके पास अधिक मूर्तियां है वे मंदिर में रखजांय और जिनके पास नहीं है वे लेजांय । ऐसी महाराजश्रीने आज्ञा की थी । उस समय कितने लोग अपने माता-पिता, दादा-दादी का फोटो भी मंदिर में रख गये थे । घर में जगह रोकता है, इधर उधर रखने से धूल धूसरित होता है, मंदिर में रखेगे तो मंदिर वाले उसकी रखवाली करेंगे ।

आप चाहे जितने भी रुपये दें उससे कोई फर्क नहीं पडेगा । परंतु यदि देव का होकर रहेंगे तो आपकी क्रेडित बढ जायेगी । जगह के अभाव में बहुत सारे पीछे खडे हैं । बडा कठिन है । ५०% प्रतिशत को हम पहचानते हैं ? क्या स्वाद आता होगा ? परंतु उनके भीतर समर्पण की भावना है । वे देव के हो गये हैं । कितने लोग तो चौक में बैठे हैं । वहाँ कोई ए.सी. नहीं है, परंतु वे देव की गोंद में बैठे हैं । उनकी अन्तर की भावना है घनश्याम महाराजके मंदिर का जीर्णोध्धार किया गया, इसके निमित्त पांच दिन का उत्सव करना है । धोषणा होते ही कितने यजमान उत्सव के लिये लाख - लाख रुपये देकर यजमान बनने लगे । भगवानने आप कोदिया है उसका सदुपयोग कर रहे हैं यह अच्छी बात है । परंतु रुपये की अपेक्षा हमें निष्ठा अच्छी लगती है । जिन्हे देव की निष्ठा तथा आश्रय का बल है ऐसे भक्तों के ऊपर हम बहुत प्रसन्न होते हैं । पैसे से निष्ठा नहीं मिलती ।

भगवान के अनंत गुण, ऐश्वर्य, प्रताप का अनंत शास्त्रों के माध्यम से बड़े - बड़े योगी - संत भी वर्णन नहीं कर सकते . ऐसे अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने स्वरुप श्री नरनारायणदेव को अपने बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया है, फिर भी जो लोग इन्हें पहचान नहीं सके हैं, इसीलिये यत्र - तत्र भटकते रहते हैं । ऐसे लोगों पर गुस्सा न

आता बल्कि दया आती है।

आप सभी में श्रद्धा न होती तो प्रातःकाल से इतनी भीड़ में क्यों एकत्रित होते। अभिषेक पूरा होते ही भी खत्म हो गई। हमें भी भीड-भीड़ बहुत अच्छा नहीं लगता। थोड़ा धक्का मुक्का हम भी खाये। कितने भक्त तो हमारी धोती ही खींचते हैं। धोती क्या पैर भी खींचते हैं। दूध-दहीं हमारे वस्त्रो के ऊपर कितना पड़ा है। किन्तु भक्तलोग चरण स्पर्श की महिमा से नीचे झुकते हैं, यह हंसने की वात है। हमें ऐसी आदत है कि हंसने की कोई बात हो तो हंसलेता हूँ। हंसी करलेता हूँ। हम सभी बड़े भाग्यसाली हैं।

हमें ऐसे देव मिले हैं। मैं यह सत्य मानता हूँ कि हमें ऐसा पद मिला है। लेकिन इसके लिये नहीं। परंतु नरनारायणदेव के चरणों में मस्तक झुकने का अवसर मिलता है। इसीलिये भाग्यसाली हूँ। आपको ऐसा नहीं लगता कि कितनी मजा आती होगी। दुनिया भूलजाय, जब भगवान के चरणों में नतमस्तक होते हैं, उठने का मन ही नहीं कहता। यह वात करते समय अभी शरीर में रोमांच हो आया। यह अनुभव अन्यत्र कहीं नहीं होगा। इस देव के मिलने से अन्नवस्त्र तथा प्रतिष्ठा भी मिली है। कुछ बाकी नहीं है। तो क्यों कंगाल रहें।

नंद संतो की झोली में सोना मोहर थी। ब्रह्मानंद स्वामी आनंदानंद स्वामी ए सभी संत बड़े संभ्रांत परिवार से थे। लेकिन महाराज के मिलने के बाद सभी का त्याग कर दिये। उन्हे दृढ आश्रय का बल था। बड़े सूक्ष्म चिन्तन के बाद यह स्मरण होगा कि संतो में कितनी त्याग की भावना थी। हमें भी देव में दृढ निष्ठा रखनी होगी तभी कल्याण संभव है। हम भी छाती ठोककर कह सकते हैं। १०-१५ दिन के बाद यहाँ आये, कच्छ गये, अमेरिका गये, पुनः कच्छ गये। यहाँ आनेपर ऐसा होता है कि देव के लिये बहुत कुछ हो सकता है। ताकत भी उन्हीं से मिलती है। अन्तिम श्वांस तक देव का कार्य करना है। देव का होकर रहना है। सभी शास्त्रों का सारभी यही है। शा. स्वा. निर्गुणदासजी की तरफ देखकर इसके अलांवा और कुछ शास्त्रों में है क्या ? ए विद्वान संत बैठे हैं, महंत स्वामी बैठे है, किसी से पूछे सभी का सार यही होगा कि देव का होकर रहना चाहिए। सभी एकत्रित हुये, दर्शन किये, महाराज प्रसन्न हों ऐसा कार्य करते रहना चाहिये।

छपैया में घनश्याम महाराज के जन्म स्थान के मंदिर का उत्सव ता. २५-१०-१७ से ३०-१०-१७ तक करना है। उस समय बजार भी बन्द होगा। याद रखना चाहिये कि हमें चारधाम की यात्रा भी करनी है। अडसठ तीरथ चरणे ऐसा कहा गया है। जन्म स्थान का बड़ा उत्सव करना है। हमें ऐसा मानना चाहिये कि हमारे भाग में जन्म स्थान मिला है। सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किये यह भी हम सभी के भाग्य की वात है। मजा नही आ रही आप लोग खूब ताली बजाते हैं तब डर लगती है। ऐसा लगता है कि भुलाने के लिये ताली बजा रहे हैं। परंतु ऐसा नहिं, मैं समझता हूं कि किसी अन्य कारण से ताली बजा रहे हैं।

सत्संग में हम कभी रजा नहीं लेते। शरीर है। कभी प्रतिकूल स्वास्थ्य हो फिर भी दवा खाकर सत्संग में जाना पड़ता है। किसी गाँव में ३० बार गये हों किसी गाँव में एक वार गये हों और पुनः वहाँ पर ३० वर्ष के बाद जाना हुआ हो। लूणावाला गाँव में ३० बार गये। अब में अपने जन्म के दिन हार नही पहनना है। आप सभी का समय नहीं बिगाड़ना है। आप सभी का प्रेम, भावना है। इसलिये हार पहनते हैं। यद्यपि हार पहनकर मैं प्रसन्न नहीं होता। सभी हार पहनेगे तो काम कौन करेगा। हम जो काम करते हैं वह इसलिये कि हमाराजन्म ही श्री नरनारायणदेव की सेवा के लिये हुआ है। वडा प्रधान ने केशलेश इन्डिया किया और मैं दो काम करना चाहता हूँ। (१) नेमलेश पत्रिका (२) हारलेस सभा। पत्रिका में हमारा भी नाम नहीं हो, केवल देव का ही नाम हो। पुरानी पत्रिका को बाहर निकाले उसमे देव के सिवाय किसी का नाम नहीं होगा। सत्य तो यह है कि किसी का नाम रहने वाला है ही नहीं। हमारी परंपरा के नाम को भी लोगों को रटना पडता है।

पहले के समय में मंदिरों में दान देने वालों का शिलालेख किया जाता कहीं दिखाई ही नहीं देता। जिस तरह दीपक का प्रकाश होता है उसके साथ धुंआ भी निकलता है ठीक वैसे ही नाम लेख से थोडा मन में तो आता ही है। पंखे के पांख में भी नाम लिखा जाता है। इस समय ऐसा नहीं होता नं. १ पंखा घूमे तो मान आ जाता है। आनंदानंद स्वामीने अमदावाद, जेतलपुर के मंदिर का निर्माण करवाया। इस तरह की हवेली बनवाये। ब्रह्मानंद स्वामीने मूली, वडताल, जूनागढ जैसे बडे-बडे मंदिर बनवाये लेकिन कही भी नाम लेख नहीं करवाये। आज से करीब १९ वर्ष पूर्व हम एक अभियान प्रारंभ किये। उस समय अढाई रुपये की भी नहीं, सवा रुपये तक की भी नहीं, क्यों बापा ? (वयोवृद्ध दादा की तरफ देखकर) हाँ, एक सवाये चार आना। सूर्य चन्द्र जब तक तपें तब तक की लिखान, भंगार पत्थर पर लिखा हुआ दिखाई देता हैं। ठीक है उस समय रहा होगा। परंतु बाद में संत एकत्रित होकर नामवाले पत्थरों को निकालने का विचार किये। लेकिन नया पत्थर लाने के लिये पूरे पैसे नहीं

थे । बाद में हमने सूचन किया कि, पत्थर को उल्टा कर दिया जाय । बाहर के भाग को भीतर की तरफ कर दिया जाय । नाम तो रहेगा लेकिन दिवाल के भीतर रहेगा । गुप्त सेवा ? अभी तो कितने लोग गुप्त दान देते ही है ? एक हरिभक्त तरफ से...... नाम के पीछे दोडने वालों का कुछ नाम शेष भी नहीं रहने वाला है । यही सनातन सत्य है । इसलिये नाम वाला पत्थर तो मात्र देव का ही होना चाहिये ।

आगामी हमारे जन्म दिन पर हुमन राइट (मानव अधिकार के रुप में निश्चित किया है । श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके चलते हुये जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी का दर्शन करेंगे ? और-और और सुनिये यह क्यों ? उसदिन पैसा नहीं चाहिये, परंतु छोटा काउन्टर २५ रु, ५० रु. आप सभी से लेकर अनाथ बालकों के लिये कहीं अनाथाश्रम पसंद करके वहाँ पर बाथरुम, पलंग इत्यादि जो भी जरुरत की सामान हो उसे उपलब्धकराना है । इस कार्य से तीन लाभ होगा - देव दर्शन, मानवता का कार्य तथा कसरत । महाराजने शिक्षापत्री लिखी उसके पहले के कार्य तो देखिये । कूँवा खुदवाये, बावली बन वाये, अन्नक्षेत्र चलवाये माला फेरने का कार्य तो बाद में किये ।महाराज को या नंदसंतो को पानी नहीं मिलता था ? हरिभक्तो को खाने को नहीं मिलता था ? संप्रदाय के लिये नहीं अपितु मानवता को ध्यान में रखकर कार्य किये । किसी का भी हित हो, मूल की आवश्यकता पर ध्यान दिये । हम अपने सुख - आनंद में ही फंसे न रहें, मानवता के लिये भी सोचें, जरुरत वालो में सेवा पहुँचे यह आवश्यक है । इसके लिये ५ रुपये १० या ५० लाख वाळो की जरुरत नहीं है । देव प्रत्यक्ष बिराजमान है । ये सभी निष्ठावाले भक्त .... एक एक केजेबको खाली कराना है .... अधिकार है, प्रेम से परंतु ऐसा नहीं, प्रत्येक को ममत्व होता है, दर्शन की महिमा समझ में आवे, एक साथ मिलकर मानवता का कार्य करें तथा इसके साथ मूल भूत सिद्धांत समझ में आये और उसका रख रखाव हो सके । यह करें वह करें यहाँ जांय वहाँ जांय इस में ही यहां किसके लिये आये वह भूल जायेंगे । आज चालू दिन है । काफी समय हो गया है । महंत स्वामी अन्नकूट की आरती करने के लिये व्यग्र लग रहे हैं । स्वामी ! आपका अंगूठा कदाचित दुखता होगा । लेकिन महाराज तो हमारे हैं । आपके अंगूढे के लिए आज प्रातः काल ही प्रार्थना किये कि हमारे महंत का अंगुठा दुःखना बन्द हो जाय । ये संत हमारे मूल तत्व है । काम करना सरल नहीं है । परिवार की भावना से प्रेम से संप्रदाय चलता है ।

अधिक नहीं कहना है, देव कायह चौखट तथा ये देव..... इस वात को यदि हृदय में धारण करलें तो पाटोत्सव सार्थक है । बड़े प्रेम से आप सभी लोग ४५ वर्ष तक हमें सहन किये हैं । थोडा वर्ष और सहन करो बाद में लालजी महाराज को दे देंगे । अंत में संप्रदाय की उन्नति हो तथा यजमानों का सर्वविधशुभ हो ऐसी देव को प्रार्थना के साथ शुभाशिर्वाद ।

कांकरिया, मंदिर में ब्रह्मभोज तथा पाटोत्सव ता. ३-३-१७ प्रासंगिक सभा में दोपहर को १२-३० बजे का समय हो गया उसी के सन्दर्भ में प.पू. महाराजने कहा कि - १२ बजे के बाद बोलना ब्रह्महत्या के समान है । हमें ब्रह्म हत्या की तरफ नहीं जाना है । कहने का तात्पर्य यह है कि सत्संग में बहुत व्यवहार नहीं लाइये, परंतु व्यवहार में सत्संग लाइये । महाराज का ऐसा स्वभाव है कि जहाँ भक्तों में अधिक प्रेम देखते है वहाँ दौड़ के जाते हैं । जिस महाराज के पीछे गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी इत्यादि बड़े - बड़े संत फिरते इतनाह ी नहीं, महाराज की एक दृष्टि की झलक के लिये तरसते वही महाराज सगराम भक्त के घर में जाकर छुपे रहे । इसलिये महाराज को प्रसन्न करने के लिये बड़े-बड़े बंगले बड़ी बड़ी, दुकान कारण भूत नहीं है । सगराम कोई शास्त्र नहीं पढा था । कितने वेद हैं इसकी भी खबर नहीं थी सही करने की क्या वात अंगूठा भी लगाने नहीं आता था । फिर भी ऐसे सगराम के घर महाराज एक रात रुके । संत लोग खोजते हुये वहाँ गये थे । शबरी तथा रामचंद्र भगवान का प्रसंग तथा अन्य इतिहास हम सभी जानतै हं । अधिक भाषण करने से भी सत्संग नहीं कराया जा सकता । हाँ वातावरण की असर अवश्य होती है । मंदिर की ऐसी सभा में बैठे और कांकरिया के किनारे लारी की पानीपुरी के लिये जाकर बैठे दोनो के विचार में अन्तर तो होगा ही । अधिक नहीं २% प्रतिशत अंतर तो अवश्य होगा । इसका मतलब वातावरण के साथ आचरण भी जरुरी है । हनुमानजी के आगामी उत्सव में कालुपुर मंदिर में उस मंदिर तक पदयात्रा करनी है । जिन्हे साथ आना है वह साथ आ सकते है । मुंबई में एकबार २४ वें मंजिल पर जाना था । पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंत) हमारे साथ थे । हम सीढी चढकर पहुंच गये तथा पी.पी. स्वामी एक मंजिल चढकर लिफ्ट का उपयोग करके हमारे साथ ही हांफते हुये पहुंचे । इस समय पी.पी. स्वामी को आगे करके चलना है । देखतै हं कौन कितना चलता है । शरीर को स्वस्थ रखना बहुत जरुरी है । अन्त में सभी को शुभाशिर्वाद दिये थे ।

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर पाटोत्सव एवम् बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा ता. ५-३-१७ : केमरा तथा केमरामेन

प.पू. महाराजश्री के सामने आजारहे थे । उन्हे लक्ष्य करके महाराजश्रीने कहा कि थोडा साइट में आप लोग अपने केमेरों को कर लीजिये । यह भुंगडा तो रोज देखने में मिलता है । परंतु इन हरिभक्तों को दर्शन कहाँ से होगा ? ठीक है । उन लोगों की ड्युटी हैं । परंतु अवरोधन हो ऐसा कीजिये । बहनो के मंदिर में महाराज विराजमान हो गये थे । यह कार्य पहले होना चाहिये था । बहने गृहकार्य का भार होनें पर भी पुरुषों की अपेक्षा भजन भक्ति में मन को अधिक लगाती हैं । यद्यपि यहाँ पर बहनों का मंदिर था, तथापि यहाँ का सत्संग बढने से अलग बनाना आवश्यक हो गया था । मंदिर का खूब उपयोग कीजियेगा । बगल में भोजनालय बनाये हैं । हाँ, भोजन नहीं प्रसाद, कितने प्रसादिया भगत होते हैं । प्रसाद पेट में जायेगा तो कभी उसका फल मिलेगा ही । महाराजने भी सभी को खूब प्रसाद खिलाया है।

पुराने जमाने में मंदिर में आरती हो तब नगारा, झालर बजती थी । बालकों को बहुत मजा आती थी । नगारा बजाने के लिये सभी एकत्र हो जाते । वर्तमान में सभी वाद्य यंत्र ईलेक्ट्रिक से चलते हैं । आरती की भी केसेट बजती है । हमारे व्यक्तिगत अभिप्राय के अनुसार जहाँ पर आरती में बहुत संख्या न हो, पुजारी अकेले आरती करने वाला हो वहाँ पर इलेक्ट्रिक सामान ठीक है । लेकिन जहाँ पर खूब भीड़ होती हो वहां पर भक्त लोग स्वयं आरती बोलें वहीं ठीक है । छोटे बालक भी साथ में आरती बोलेंगे कितना अच्छा लगेगा । इस आरती के ऊपर एक वर्ष तक कथा हो सकती है ऐसा है । मुक्तानंद स्वामीने ऐसी महिमा का वर्णन उसमें किया है । क्यों स्वामी ? (पू. निर्गुण स्वामी की तरफ देखकर) सत्य तो यह है कि पंखा इत्यादि जो भी ईलेकट्रिक साधन हैं उसका जितना अधिक उपयोग करेंगे उतनी एनर्जी अपनी खत्म होगी ।

अपने हस्त कमल में मोबाईल दिखाकर प.पू. महाराजश्री बोले कि जब से इस मोबाईल का डिब्बा आया है तब से शांति खत्म हो गई है । कितने लोग तो उसीमें रचे पचे रहते हैं । अभी अमेरिका से एक सज्जन का एस.एम.एस. आया कि स्वामिनारायण भगवान के ऊपर पी.एच.डी. करने के लिये भारत आना है । हरिद्वार मे निवास व्यवस्था के लिये निवेदन करता है । वह भाई भगवान की शोधमें अमेरिका से भारत आ रहा है । यहाँ के लोग तो चाहते हैं कि स्कूटर की कीक न मानरी पडे और भगवान घर में दर्शन दे जांय । नजदीक के मंदिर में जो प्रत्यक्ष प्रभु हैं उनके दर्शन के लिये भी लोग विचार करते हैं । अब कथा भी पोथी की जगह पर आइपेड रखकर होने लगी है । महाराज कहते कि हमारी वाणी ही हमारा स्वरुप है । इसीलिये हम शास्त्र का पूजन करते हैं । इस इलेक्ट्रिक साधनो को चंदन चोखा करने जायेंगे तो और सब रह जायेगा । इलेक्ट्रिक साधनों का मर्यादित उपयोग करना चाहिये । बेटी-बेटा के लिये प्रायः सभी लोग मिल्कत की बिल बनाते हैं लेकिन कोई अपने संतो के लिये कोई बिल किया हो ऐसा आपलोग सुने हैं ? संतो के लिये खूब लंबा विचार करके वापिस में भगवान को दीजियेगा । संस्कार दीजियेगा तथा उसकी प्राप्ति के लिये मंदिर ही प्राप्ति का साधन है।

अनु. पेईज नं. ९ से आगे

नैष्ठिक वर्णियो में ऐसे आपसे समस्त प्राणी मात्र के सुखरुप ऐसे वेदादि सत्शास्त्रों के समुदाय आपके द्वारा प्रवर्तित हैं । इसके साथ ही आपकी तपस्यादि कर्म जो देवादियों से भी दुष्कर है वह तप आप करते हैं । ऐसे हे श्री नरनारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ।।६।।

ये ये निवृत्तिमुपयान्तिविरागवेगात्संसारभीति जनितादधिभूमि ते ते ।
यस्याश्रयेणसुखिनोऽत्र भवन्ति तं त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ।।७।।

संसार के जन्म मृत्यु के भय से उत्पन्न वैराग्य वाले पुरुष निवृत्ति मार्ग का अनुसरण करते हैं । उन सभी को एकमात्र आपके आश्रय से इसलोक में तथा परलोक को सुख प्राप्त होता है । इसलिये आप ही निवृत्ति मार्ग वाले त्यागियों के आश्रय करने योग्य हैं । ऐसे हे श्री नरनारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ।।७।।

यत्पादपद्मकरन्दसैकलुब्धौ ब्रह्माण्डसौख्यमखिलं हि कदाचिदेव ।
रंकोपिनेच्छन्ति सुखाम्बुधिमेव तं त्वां नारायणं मुनिवंर बदरीशमीडे ।।८।।

जिन जीवात्माओं को आपके चरण कमल का रसास्वाद मिला हो वे चाहे कितना भी आज्ञानी हो तो भी समग्र ब्रह्मांड के सुख नहीं चाहता और ज्ञानी विद्वान हों तो वे कैसे चाहेंगे । ऐसा आपका सुख महान है । कारण यह कि आप ही सुख के सागर है । ऐसे हे श्री नरनारायण ऋषि मैं आपकी स्तुति करता हूँ ।।८।।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

आज के युग में मोबाईल तथा माला ए दोनो ऐसी वस्तु है कि जिससे आप अपने को अकेला अनुभव नहीं कर सकते । योग्य विकल्प आपको खोजना है । प.पू. बड़े महाराजश्री । हजारो सत्संगियो के अभ्यास के बाद पू. महाराजश्रीने यह वात गंभीरता से चिन्तन करके कहा होगा, और अंतिम निर्णय भी सत्संगियो को विवेक बुद्धि के ऊपर छोड़ दिया । एक सुविधा के रुप में मोबाईल का उपयोग अच्छा है लेकिन उसका अतिरेक कहाँ ले जायेगा यह संशोधन का विषय हो गया है । कितने लोग बाहर गाँव घूमने जाते हैं उस समय भी प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद न लेकर मोबाईल में गेम खेलते हैं अथवा उससे जब थक जाते हैं तो बाहर गये हुये व्यक्ति से बात करने का प्रयत्न करते हैं । अन्यत्र भी ऐसा करें तो ठीक लेकिन मंदिर में या म्युजियम में भी आकर ऐसा करते हैं । यह सब देखकर ऐसा लगता है कि जिस तरह उत्क्रांति के समय कालक्रम में वानर में से मनुष्य बने ठीक वही स्थिति डिझाईन में बदलाव होकर समयान्तर में पुनः बन्दर का रुप लेकर मोबाईल हाथ में लिया हुआ मनुष्य का अवतार हो .

अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण को पृथ्वी पर अवतार लिये २३५ वर्ष पूर्ण हो गया तथा बड़ी सरल भाषा में हम सभी को अपार साहित्य उपलब्धकराकर गये हैं । फिर भी २३५ वर्ष में भी हम भगवान को पहचान नहीं सके यह अपनी दुर्भाग्य ही कही जायेगी । हम एक उत्कृष्ट अभिनेता बन गये हैं जैसा चाहे वैसा अभिनय कर लेते हैं और स्वयं से स्वयं की पहचान कराना चाहते हैं ।

म्युजियम के पटांगण में एक अत्यन्त लघु काय आम्रवृक्ष बौर आ गया है । यह हम सभी को किसी विशिष्ट प्रकार की शिक्षा देता है कि उत्कृष्टता प्रदान कनरेके लिये कद का कोई महत्व नहीं होता । म्युजियम में आने के बाद बहुत सारी बाते समझ में आती हैं और वह घर कर जाती है । ऐसे समझवाले ही यदा कदा म्युजियम के दर्शनार्थ आते हैं और अपनी समझ के अनुकूल लाभ भी प्राप्त करते हैं । प्रसादी की जो भी दर्शन के लिये वस्तुयें रखी गई है उनके दर्शन से या उनके वातावरण के अनुभव से अपने में जो कमियां होती हैं वे पूर्ण सी होने लगती हैं जिससे संतोष प्राप्त होने का अनुभव होता है ।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-मार्च-१७

रु। १,११,१११/-	श्री नरनारायणदेव आयुर्वेदिक स्रोट्स, कृते जयेशभाई ठक्कर।
रु। १,००,०००/-	पटेल ज्योतिकाबहन विष्णुभाई, कृते रति, समीर तथा सपरिवार - मोखासण
रु। १०,०००/-	अनसूयाबहन सुधाकरभाई त्रिवेदी - यु.एस.ए.
रु। ५,५५५/-	सोनी दयागौरी कीर्तिकुमार, कृते तेजसभाई तथा हेतलबहन वृषाली - अमदावाद
रु। ५,५५५/-	मीनाबा मधुभा गोहिल - भरुच
रु। ५,१११/-	अ.नि. मणीलाल भालजा साहब तथा अ.नि. नंदलालभाई कोठारी - म्युजियम के वार्षिक पाटोत्सव के निमित्त
रु। ५,१००/-	बहनो के नूतन मंदिर मैं मूर्ति प्रतिष्ठा के निमित्त - स्वा. मंदिर एप्रोच - बापुनगर
रु। ५,१००/-	पार्थ नरसिंहभाई भंडेरी - बापूनगर।
रु। ५,००१/-	प्रतीक महेन्द्रभाई पटेल, इरिगेशन वर्ग-२ की नौकरी के प्रथम वेतन के निमित्त श्रीजी के प्रसन्नार्थ - नारणपुरा
रु। ५,०००/-	मीनाबहन के जोषी - बोपल
रु। ५,०००/-	धीरुभाई हीरजीभाई खोटपर कृते हितेषभाई खोखर - बापुनगर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - मार्च-१७

ता. ०१-०३-२०१७	अ.नि. स.गु. शा.स्वा. हरिस्वरुपदासजी तथा स.गु.स्वा. कृष्णजीवनदासजी के शिष्य मंडल की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. पटेल नारणभाई नरसिंहभाई तथा धर्म पत्नी गं.स्व. जीवतीबहन नारायणभाई (गुलाबपुरावाला) के स्मरणार्थ सुपुत्र प.भ. प्रवीणभाई नारणभाई तथा धर्मपत्नी सुशीलाबहन प्रवीणचंद्र की तरफ से कृते चि. दक्षेश, जिगर, फीस, तनीश तथा जीयान (अमेरिका) समस्त परिवार कृते. स्वा. रघुवीरचरणदासजी - सोकली
ता. ०१-०३-२०१७	भोजन महाप्रसाद के मुख्य यजमान - अ.नि. चंपाबहन गंगारामभाई पटेल, कृते डॉ. गंगारामभाई पटेल नारणपुरा।
ता. ०२-०३-२०१७	श्री धीरज धनजीभाई दाबडीया - लंडन।
ता. ०४-०३-२०१७	कुमुदबहन महेशचंद्र ब्रह्मभट्ट, कृते भूमिका - मिलन - नवसारी
ता. १०-०३-२०१७	जसुबहन विजयभाई हालाई - लंदन।
ता. १७-०३-२०१७	पटेल विष्णुभाई शंकरदास मोखासणवाला - घाटलोडीया।
ता. १८-०३-२०१७	भरत मावजीभाई छाबडीया, कृते वर्षाबहन नवीनचंद्र पाठक - वुलवीच-लंडन।
ता. १९-०३-२०१७	अरजवालीबहन कानजीभाई सुहागिया - कर्मशक्ति - नवा नरोडा।
	(प्रातः) दीलीपभाई तथा हितेषभाई - यु.एस.ए.-ओस्ट्रेलीया।
	(दोपहरः) पटेल नयनकुमार बचुभाई - सोला-अमराईवाडी।
ता. २२-०३-२०१७	डॉ. भरतभाई पटेल - अमदावाद।
ता. २५-०३-२०१७	कांताबहन रमेशभाई भीमजी राबडीया, कृते गीताबहन हालाई - कच्छ-भुज

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कंठी की ताकात

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

बाल मित्रो ! आप छोटे हो या बड़े, आप स्कूल में पढते हों या कोलेज में पढते हों, आप डॉ. हों या इन्जिनियर हो आप देश में हो या विदेश में, आप लाखों रूपये कमाते हों या करोडो कमाते हो परंतु स्वामिनारायण भगवान के भक्त हों तो गले में कंठी तो होनी ही चाहिये । केवल कंठी गले में हो इतना पर्याप्त नहीं है, भक्त की खुमारी होने चाहिये । मुझे किसका आश्रय है ? भगवान के आश्रय का बल, गौरव भक्त के हृदय में होना चाहिए, तभी भगवान का सहयोग मिलेगा, भगवान की कृपा मिलेगी ।

बात हैं प्रांतीज की । प्रांतीज को पुराण में प्रहलादपुर कहा गया है । बहुत प्राचीन नगर है । वहाँ एक हरिभक्त रहते थे । नाम बेचरभाई खुशालभाई था । वे मोदी जाती के थे । भगवान की एक मात्र निष्ठावाले थे । बेचरभाई को एकबार बाहर जाना हुआ । यात्रा की यात्रा स्वयं का कुछ व्यवहार हो जायेगा । प्रांतीज से वीजापुर जाना था । साबर कांठा के उस विस्तार में बहुत जंगल आता था । वह भक्त अकेले चले जा रहे थे । उसी समय यमदूत भी निकले । वे अपने काम से जा रहे थे । वेचार यमदूत थे आपस में बात करने लगे । यहाँ हम सभी को किसकी गरमी लगने लगी । उसी समय दूसरेने कहा कि हमें तो शरीर में जलन जैसे होने लगा है । कारण क्या ? वह कंठी पहने हुये जा रहा है न इसलिये ऐसा हो रहा है । वे यमदूत मनुष्य का रुप धारण करके भयंकर आवाज करने लेग । अरे भाई ! गले से कंठी निकाल दो . पेंक दो । बेचरभाई उन सभी की तरफ देखकर कहने लगे जा, जा तुम्हारे जैसे हमने कितनें मच्छडो को देखे हैं । तूं अपने रास्ते जा हम अपने रास्ते जा रहें, तुम्हें कंठी से क्या लेना देना । कंठी तो कभी नहीं निकालूंगा । यमदूतो को हुआ की जैसा तैसा भक्त नहीं है । इसकी कंठी से हमें ताप लगता है । उसके पास जायेंगे तो क्या होगा ? वे यमदूत वहां से पलायन कर गये । बेचरभाई हंसते हुये कहने लगे कि ऐसे लोग घूमने निकल पडते हैं । हमारी कंठी तुम्हें क्यों तकलीफ दे रही है । कंठी पहनने वाले को पीडा तो नहीं देती है ।

थोडे समय के बाद दूसरा एक विघ्न और आया । कोई स्त्री नवयुवति श्रृंगार किये हुए रास्ते मैं बैठी हुई थी । अलंकार – हीरा – मोती – सोना इत्यादि को धारण किये हुए थी । स्त्री बोली, यहाँ आवो । बेचरभाई को हुआ कि कोई भूली हुई स्त्री हो । रास्ता पूछना होगा । क्या काम है ? दूसरा कोई काम नहीं है । आप अच्छे मनुष्य हैं। ये सभी अलंकार सोना संपत्ति तथा मैं भी..... लेकिन आप अपनी कंठी उतार दो और लाखों की सम्पति के साथ मुझे स्वीकार करो । बेचरभाईने कहा थू...थू...थू... जा यहाँ से, ऐसा तिरस्कार करके आगे बढ गये । इतने में एक रथ दिखाई दिया संतो को उस पर बैठा देखे । बड़ा आनंद में हमारे संतो का दर्शन हो गया । संतोने कहा, बेचरभाई आओ रथ में बैठ जाओ । बेचरभाई रथ में बैठ गये । एक संत प्रसाद दिये उसे ग्रहण कर लिये । पानी दिये तो पी लिये । लेकिन स्वामी ! आप यहाँ कैसे ? श्रीजी महाराज भेंजे हैं । आपने इतना हिमत दिखाया । आप यमदूतों से डरे नहीं, आप माया में लोभाये नहीं । पहली बार जो आप देखे वे यमदूत थे । दूसरी बार जो देखे वह प्रत्यक्ष माया थी । आपको निष्ठा में से चलायमान करने आई थी । फिर भी अपनी निष्ठा से डिगे नहीं इसलिये श्रीजी महाराज ने हम संतो को आपके पास भेंजा है ।

विजापुर का विस्तार आया, बेचरभाई जयश्री स्वामिनारायण कहकर रथ से नीचे उतरे, संतो के चरण स्पर्श किये बाद में देखे तो कहीं रथ और संत नही दिखाई दिये । भगवान स्वयं दिव्य स्वरुप से बेचरभाई की रक्षा किये ।

इतना प्रताप है कंठी का । कंठी को कंठ से लगाकर रखा जाय तो ही । कितने लोगों की कंठी टूट जाती है तो कई दिन तक विना कंठी के ही रह लेते हैं । शतानंद स्वामीने लिखा है कि कंठी टूट जाय तो पानी भी नहीं पीना चाहिए । कंठी पहनने के बाद ही पानी पीना चाहिए । भोजन की वात ही क्या ? किसी कारण से कंठी टूट जाय तो गाठ मारकर तब तक पहने रहना चाहिए जब तक दूसरी कंठी न मिले । चाहे जो भी समस्या आवे लेकिन कंठी के विषय में समाधान नहीं करना चाहिए । ऐसे निष्ठावाले भक्तों के लिये भगवान स्वामिनारायण सदा प्रत्यक्ष हैं ।

''जेने स्वामिनारायण कंठी
तेनी लख चौराशी गई वंठी ।
जो भोजन करे साचा मनथी ।''

•

बुद्धिर्यस्य बलंतस्य

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मित्रो ! परीक्षा का समय चल रहा है । इस परिप्रेक्ष्य में

प्रत्येक विद्यार्थी मित्रो को ऐसा होता होगा कि हम सबसे अधिक नम्बर लेकर उत्तीर्ण हों । लेकिन याद रखना इसमें पढने के साथ बुद्धिचातुर्य की भी आवश्यकता होती है । इसी संदर्भ में आप लोग बुद्धिबाल रुपी हथियार के विषय में बांचे -

एक छोटे से गाँव में तीन भाई रहते थे । बाल काल में ही माता पिता का सहारा छूट गया । धीरे-धीरे बड़े हुये विचार करने लगे कि हम गरीब हैं । कमाने का कोई साधन नहीं है । परदेश जाकर अपनी बुद्धि का उपयोग करते हैं । घर में ताला बन्द करके तीनो भाई निकल पडे । पैदल चलते चलते, गाँवो में फिरते हुये जहाँ भोजन मिल जाता नहीं भोंजन करलेते, पानी मिलता पीलेते, अन्यथा भूखे प्यासे आगे चलते रहे।

एक दिन की वात है । तीन जन चले जा रहे थे । एक मनुष्य पीछे से आया और कहने लगा कि भाई ? आप लोग हमारा ऊंट देखे हैं । तीन में से एकने कहा नहीं, हम आपके ऊंट को देखे नहीं हैं, लेकिन आपका ऊंट एक पैर से लंगडा है न ? हाँ, सत्यवात है। तीसरे भाईने कहा कि ऊंट के ऊपर स्त्री तथा एक बालक है न ? हाँ हाँ सत्य वात है । आप लोग कहते है कि हम ऊंट देखे नहीं है, फिर भी तीनो की वात सत्य है । आप लोग मेरा उँट देखे हैं, लेकिन हमे गुमराह कर रहे हैं । आप लोग ही हमारे ऊँट को तथा मेरे बालक को चुरा लिये हैं । आप तीनो चोर हो । चलो दरबार में उसके हाथ में तलवार थी फिर भी घबडाये नहीं । उसके साथ तीनो भाई चलने लगे ।

कचहरी में आकर वह भाई अपनी शिकायत प्रस्तुत किया । राजा तीनो भाईयों के सामने देखकर प्रश्न किया कि आपलोग ऊँट स्त्री - बालक को कहाँ छिपाये हैं । यह सुनकर तीनो भाईयोंने कहा कि ऊँट - स्त्री बालक को देखा नहीं और चुराया भी नहीं हूँ । इस विषय में जानता भी नहीं हूँ । ऊँट का मालकि बोलाकि विना देखे तुम लोग कैसे पहचान बताये । इसलिये आप लोग ही चोर हो । राजाने कहा कि जो भी हो सत्य कह दो अन्यथा कठिन दंड के भागी बनोगे । राजन् ! हम बिल्कुल सत्यवात कहते हैं कि इस विषय में हमे कोई जानकारी नहीं है । लेकिन इसभाई को जो जानकारी दिये वह अपनी बुद्धि से दिये हैं । हमलोग कामकी खोज में इधर आये हैं ।

राजा को गुस्सा आ गया । ऐसा तो हो ही नहीं सकता । विना देखे प्रत्यक्ष घटना को प्रस्तुत करना बड़ा कठिन है । इसलिये तुम लोग ही चोर हो । तीनो में से बड़े भाई बोला । हम सच्चे हैं । यदि बुद्धि का सही उपयोग किया जाय तो सब कुछ जाना जा सकता है । कुछ भी अशक्य नहीं है । यह सुनकर राजाने उसकी परीक्षा लेने का निश्चय किया । प्रधान को पास में बुलाकर कान में कुछ कहा । प्रधान वहाँ से बाहर गया और थोड़े समय के बाद एअक आदमी पेटी लेकर आया । वह आदमी पेटी को राजा के पास रखा । राजाने कहा कि आप लोग कहते हैं कि बुद्धि से सब कुछ जाना जा सकता है, तो बताओं पेटी में क्या है ?

बड़े भाईने उत्तर दिया राजन् ? पेटी में छोटी तथा गोल वस्तु है । बीचला भाई बोला उसमे अमरुद है, तीसरे भाईने बोला कि वह कच्छा है । तीनो के उत्तर सही थे । इससे राजा को बड़ा आश्चर्य लगा राजाने ऊँटवाले भाई से कहा कि अब तुम जाओं ए लोग तुम्हारा ऊँट नहीं चुराये हैं। उसके जाने के बाद राजाने तीनो भाईयो को भोजन कराया और निवास की व्यवस्था किये बाद में राजाने तीनो भाइयों को एकांत में बुलाकर बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा कि आप लोग इतनी सतर्कता के साथ सत्यवात कैसे जान लेते हो । यह वात मुझे समझ नहीं आती । बड़े भाईने कहा कि हम लोग रास्ते में ऊँट का पैर देखे थे । उसमें से तीन पैर साफ दिखाई दे रहा था । एक पैर बराबर नहीं दिखाई दे रहा था । इससे हम लोगों ने निश्चय किया कि ऊँट पैर का लंगडा होगा । दूसरे भाईने कहा कि रास्ते के एक तरफ का पत्ता खाया गया था इससे हमें लगा कि ऊँट एख आँक का काना होगा । तीसरे भाइने कहा कि ऊँट एक जगह बैठा था जहाँपर एक छोटे पैर की निशान थी तथा दूसरी निशान बड़े पैर की थी इसलिये एक बालक तथा दूसरी पत्नी होना हमने निश्चित किया । इस प्रकार की निश्चितता हम सभी ने किया । तीन का उत्तर सुनकर राजा भाव विभोर हो गये । और कहने लगे कि आप सभी की दृष्टि तथा बुद्धि को धन्यवाद । अमरुद के विषय में कैसे निश्चित किये । भाइयों ने उत्तर दिया कि - आदमी जब पेटी लेकर आ रहा था उसके मुख के हाव-भाव से स्पष्ट हो रहा था कि पेटी में वजन नहीं है और जब नीचे रखा तब हलन-चलन जैसे सुनाई दिया । इससे निश्चित किये कि वस्तु गोल है । इसके अलावा जो व्यक्ति अमरुद लाया वह बगीचे की तरफ से आ रहा था, इससे यह स्पष्ट हो गया कि जो गोल वस्तु है वह अमरुद है । दूसरी बात यह कि इस समय अमरुद का सीजन नहीं है, अतःकच्चा है । इस तरह अपनी बुद्धि के चातुर्य से निश्चित किये ।

तीनो भाइयों के इस विचार को जानकर राजा आनंदित हो गया । तीनो भाइयों को राजदरबार में उच्च पदाधिकारी बना दिया । बाल मित्रो ! यदि बुद्धिशाली व्यक्ति हो तो कभी दुःखी नहीं होगा । स्वयं यदि बुद्धिशाली बनना हो तो अच्छी पुस्तक का वांचन करो, माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, संत पुरुषों का सत्संग करो । आप लोग जानते होगें कि जनमंगल स्तोत्र में स्वामिनारायण भगवान का १०८ नाम है । उसमें से एकनाम है ''बुद्धिदाता'' ऐसे भगवान की पूजा - पाठ, दर्शन, माला-प्रार्थना की जाय तो अपने भीतर सद्बुद्धि आवे तथा इस लोक तथा परलोक में सुखी बने ।.

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के सानिध्य में अंजली मंदिर (वासणा) में दशाब्दी महोत्सव अन्तर्गत महिमा सत्संग सभा

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

धर्मकुल की आज्ञानुसार अपने में रहने वाली उर्जाशक्ति को यथायोग्य स्थान में लगाने के लिये सन्तलोग खूब परिश्रम करके वारंवार उत्सव का आयोजन करते हैं। वरसात तो जमीन पर वरसता है, लेकिन उस जमीन पर रहने वाला पत्थर कोरा ही रह जाता है। इसी तरह हमें कोरा नहीं रहना है। परंतु इन उत्सवों के माध्यम से सत्संग रुपी बगीचे में नवपल्लवित होता है। धर्मकुल का दृढ आश्रय तथा संत समागम रुपी नौका के माध्यम से यह जीवन भव सागर पार हो सकता है। ऐसे बड़े बड़े उत्सवों में सतत सत्संग से शरीर को थकान अवश्य लगेगी। परंतु अंतर में शांति का अनुभव होता है। इसके साथ ही श्रद्धा और निष्ठा परिपक्वबनती है। सत्संग ऐसा साधन है कि थोडे समय में सब कुछ प्राप्त हो जाता है। इस सभा में अनेक धामों से सां.यो. बहने पधारकर धन्यता का अनुभव कराया है। वासणा अंजली मंदिर की महिला मंडल की बहनोने जो नृत्य, गर्वा, नाटक किया है इससे प.पू. गादीवालाजी की प्रसन्नता प्राप्त की है। प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी अपनी अमृतावणी द्वारा समस्त सत्संग सभाको तृप्त की। प.पू. गादीवालाजी के सत्संग का सभी बहनों को लाभमिलता रहे इसके लिये प्रयत्न कर रही है। प.पू. गादीवालाजी के चरण की तथा श्री नरनारायणदेव के शरण की नित्यता सदा बनी रहे ऐसी प्रार्थना। प्रत्येक महीने की प्रतिपदा तिथी को कालुपुर मंदिर से अंजली मंदिर में दिव्यज्ञान का लाभ देने के लिये सां.यो. बहने पधारती है। इसका लाभ लेने के लिये सभी बहने पधारे।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन

बहुत विचार करने की जरुरत नहीं है। थोडा प्रयत्न करने से सबकुछ सरल हो जायेगा। इस ब्रह्मांड में तीन वस्तु शास्वत है। प्रथम, आत्मा दूसरा जीव, तीसरा परमात्मा (भगगवान)। हम सभी माया के चक्र में बहुत जन्मों से फिर रहे हैं। माया में शांति नहीं है। शांति है तो परमात्मा की शरणागति मैं। शांति मांगने से नही मिलती। मांगने का ढंग भी होना चाहिये। जैसे छोटा बालक है अपने मां से जब रोकर कुछ कहता है तो मां समझजाती है कि किस लिये रो रहा है। विना मांगे मां उसे वह वस्तु दे देती है। इसी तरह भगवान के सामने रोने से अन्तर के भाव से रोने पर भगवान अवश्य प्रसन्न होंगे और यथेष्ट वस्तु प्रदान करेंगे। इसके लिये अन्तर में सच्ची व्याकुलता होनी चाहिये। हम भगवान को सामने रोते अवश्य हैं लेकिन जगत के व्यवहार के लिये, न कि मोक्ष के लिये। जगत की सभी वस्तुये मायिक है, क्षणिक है। जो भी करते हैं अज्ञान के कारण करता हैं। अन्धमनुष्य की तरह जगत के अस्थाई सुख की अपेक्षा शक्य नहीं है। शांति की चाहना हो तो अन्तर को समृद्ध करने की आवश्यकता है। महात्मा गौतम बुद्ध को क्षणभर में ज्ञानमय हो गया कि जो किसी के पास नहीं है वह हमारे पास है फिर भी सुख-शांति नहीं है। जगत की सम्पत्ति सुख-शांति नहीं देती इसीलिये तो उन्हें वैराग्य हो गया। आप लोग यहाँ बैठी हैं। यह सत्संग सभा है। इससे अन्तर में शांति मिल सकती है, बाहर से नहीं। मन में एक बार व्याकुलता होनी चाहिये। भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्त के अन्तर में विराटरुप दिखाते हैं, अपनी अनन्य शक्ति बताते हैं। इससे उसे ज्ञान होता है। बाहर सेनहीं। ब्रह्मा-विष्णु-शिव ए देवता स्वरुप है। इन्हें चलाने वाला भी भगवान है। देवात भी अपने स्थान को वचाने के लिये भगवान से प्रार्थना करते हैं। सत्-चित्-आनन्द स्वरुप परमात्मा की शक्ति है। हमें तो परमात्मा का अनन्य भक्त बनना है। परमात्माकी असीम शक्ति का दर्शन करना है। भजन-भक्ति में मैं - तू की भावना नहीं आनी चाहिए। कर्ता - हर्ता भगवान को मानिये। अपने हाथ से जो भी अच्छा कार्य हो उसे भगवान कीकृपा बनानी चाहिये। भगवानने हमे उस कार्य के लायक समझा ऐसा समझना चाहिये। इसलिये वह कार्य हमें मिला। करोडो पतिलोग होते हैं फिर भी उनके लिये भगवान अलग से नहीं आते। लेकिन भक्त के वशमें होकर भगवान अवश्य आते हैं। कुछ ऐसा काम करने के लिये भगवान व्यक्ति को निमित्त बनाते हैं। इसलिये हमे सदा यह विचार कर अच्छा काम की सोच करना चाहिये जिससे भगवान हमें उस कार्य का निमित्त बनावें। अपने भीतर कमी क्या है इसका चिंतन करते रहना चाहिए। सत्संग के माध्यम से यह कार्य शक्य है। सरल है। एक वात मैं सदा कहती आ रही हूँ कि श्री नरनारायणदेव जिस पूजा में नहीं वह पूजा अधुरी कही जायेगी। महाराजने वचनामृत में सत्संगी मात्र को "श्री नरनारायणदेव को" पूजा में रखने की बात कही है।

•

अहं ममत्व रुप माया

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्रीजी महाराजने वचनामृत ग.प्र.१ मे गोवर्धनभाई के प्रश्न – भगवान की माया क्या है, उसके उत्तर में महाराजने कहा कि – जो भगवान के भक्त तो उनके भगवान की मूर्ति में ध्यान करते समय जो विघ्न आवे वही माया है । महाराजने माया शब्द की बड़ी सरल व्याख्या की है । जो भी जगत का व्यावहारिक पदार्थ भजन भक्ति में अवरोधकरे वही माया है । चाहे वह पति-पत्नि, बेटा, बेटी, परिवार, घर गृहस्थी जो भी मायिक पदार्थ है वह सब माया है । यह सभी नाशवंत है । पिर भी इन्हे सत्य मानकर उसी में रचेपचे रहते हैं यही माया है । शरीर में से अहंपना तथा शरीर के सम्बन्धियों में ममत्वपना दूर न होना ही माया है।

माया त्रिगुणात्मिका है । भगवान की शक्ति माया है । माया दो रुप में रहती है – अह बुद्धि के रुप में देह में तथा ममत्व बुद्धि रुप में देह के सम्बन्धियों में । अहंता ममता का नाम ही गया है। संसार में दृढता बन जाना ही माया है । जो भी कुछ है वह मेरा है। ए हमारे पिता है । ये हमारी माता है, बेटा हे – बेटी है इत्यादि । संत कहते हैं कि इसे समझने के लिये अभ्यास की आवश्यकता है।

स.गु. देवानंद स्वामीजी लिखते हैं कि –

संस्कारे संबन्धी सर्वे मल्या रे, ए चे झुठ्ठी माया केरी जल,
अन्तकाले सगु नथी कोईनुं रे ।
कर प्रभु संगाथे दृढ प्रीतरी रे, मरी माऊ मेलीने धन माल
अन्तकाले सगुं नथी कोईनुं रे.''

गृहस्थी का घर तथा रेलका डिब्बा दोनो समान होता है । अहमदाबाद से मुंबई की ट्रेन में जानेवाले लोग आपस में इतना हिल मिल जाते हैं कि लगता है बहुत पुराने संबंन्धी हैं, लेकिन जहाँ जिसका स्टेशन आया वही वह उतर जाता है । गृहस्थाश्रमी के घर में भी ऐसा होता है कितने लोग आते हैं और चले जाते हैं। इसमें किसके साथ ममत्व रखेंगे । अहं ममत्व को पैदा करने वाली माया है।

अपने संप्रदाय में भी माया में संतो का चित्त लगा हुआ है। स्वामिनारायण भगवान वन विचरण करके जब स.गु. मुक्तानंद के पास लोज गाँव में ओ उस समय संत लोग तुंमडी रखते थे तुंमडी को कलर करना पड़ता । स्वामी तुमडी का कलर करके धूप में रखे और दोपहर के ध्यान में बैठ गये उस समय ध्यान करते जांय और तुमडी की याद भी करते जांय कौआ उस पर विष्टा न कर जाय जिससे अपवित्र न होजाय इत्यादि नीलकंठ वर्णी स्वामी के संकल्प को जानकार कहे कि तुंबड़ी कीमती है कि ध्यान रखना कीमती है । स्वामी खड़े हो गये । प्रभु ! भूल हो गई । यदि भगवान के ध्यान के समय तुंमडी का ध्यान ही माया है । भगवान के भक्त को माया तो अत्यंत सुखदायी है । क्योंकि माया के कार्य को जो इन्द्रियां, अन्तःकरण तथा देवता सभी भगवान की भक्ति को पुष्ट करते हैं।

श्रीकृष्ण परमात्मा अर्जुन से कहते हैं कि मेरी माया तीन गुणों वाली है । उसको जानना बड़ा कठिन है । लेकिन जो मुझे पालेता है वह माया से तर जाता है । भगवान मिले तो अपना काम हो जाय । इसी लिये तो भगवान स्वामिनारायण से प्रार्थना करिये कि हे महाराज अधमो काउद्धार करने वाले सर्वोपरि, क्षमानिधि, प्रेम के सागर आप हमारे हृदय में आकर निवास करो । भगवान के पधारते माया दूर हो जाती है । लेकिन भगवान को अपने हृदय में स्थान देने की श्रद्धा होना चाहिये । एकवार भगवान स्वामिनारायण भक्तों को विदाई करते समय कहे की आप लोग प्रसन्न रहना । हरिभक्त थोडा दूर गये तब उन्हें ख्याल आया कि हम लोगों का प्रसन्न रहने की वात क्यों किये । हरिभक्त भगवान के पास गये । उस समय महाराजने कहा कि आप लोगो को जो हृदय है उसे साफ-सुथरा रखियेगा, तभी मैं उस में आऊँगा । तब तक उसमें भगवान नहीं आयेगें । क्योंकि अहं-ममत्व रुपी माया उसमें बैठी है माया के दूर होने पर जगतपति उसमे आयेंगे और परम शांति की प्राप्ति होगी ।

•

मै मनुष्य, मनुष्य बनपाऊँतो अच्छा

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

संसार की सृष्टि में मनुष्य ऐसा प्राणी है कि जो बुद्धिमान है। सर्जन तथा संशोधन कर सकता है । परंतु मनुष्य यदि यथार्थतः बुद्धिमान प्राणी हो तो जान बूझकर उसे कूंये में नहीं पड़ना चाहिए । आग के सामने नहीं खेलना चाहिए । सनातन सत्य को नहीं भूलना चाहिए ।

मनुष्य जानता है कि मृत्यु के बाद हमारे साथ कुछ भी आनेवाला नहीं है । फिर भी जीवन पर्यंत आंख बन्द करके संपत्ति के पीछे दौड़ता रहता है । शरीर या परिवार की भी चिंता नही करता । इसलिये एकत्रित की गई सम्पत्ति का सद्मार्ग में उपयोग भी नहीं कर सकता । यह सनातन सत्य सभी जानते हैं। फिर भी उसका पालन करने वाला करोडो में कोई विरला ही होता है । तो मानव को क्या करना चाहिए । मानव को अपनी सम्पत्ति का उपयोग स्व कल्याण के साथ मानव कल्याण में, परोपकार के कार्य में, दीन दुःखियों की सेवा में, धर्म की सेवा में उपयोग करना चाहिए । जिससे उसकी कीर्ति अमर हो जाय ।

आज की सबसे बड़ी समस्या व्यसन तथा फैसन है । सभी

धर्मगुरुओं तथा धर्मसुधारकों में ''श्री सहजानंद स्वामी'' का नाम सबसे प्रथम है । कारण यह कि उनके संत तथा भक्त में व्यसन का स्थान नहीं है । श्री सहजानंद स्वामीने जो व्यसन मुक्ति का अभियान चलाया वह आज भी चल रहा है । वह प्रसंशनीय तथा समाजोपयोगी - कल्याणकारी कार्य है ।

आज का मनुष्य तन की स्वच्छता के पीछे घन्टों बिगाड़ता है । लेकिन मन की स्वच्छता की उपेक्षा करता है । उसे तन की स्वच्छता के साथ मन की स्वच्छता भी रखनी चाहिये । कारण यह की उसका तन स्वच्छ हो लेकिन मन स्वच्छ (स्वस्थ) न हो तो उसमें राग-द्वेष, ईर्ष्या, मात्सर्य, क्रोध, मोहमाया इत्यादि अन्तर के शत्रु उसे शांति से जीने नहीं देंगे । इसलिये मन की स्वच्छता के लिये प्रार्थना, ध्यान तथा एकाग्रता प्राप्त करने की कोशिष करनी चाहिए । इसके लिये प्रार्थना - ध्यान इत्यादि आवश्यक है । मनुष्य को यह भूलना नहीं चाहिए की माया मारती है और त्याग तारता है । जिसका मन स्वच्छ उसका तन स्वच्छ, जिसका मन स्वच्छ उसका अंतर स्वच्छ, जिसका अन्तर स्वच्छ उसी के हृद यमें श्रीहरि का वास और वही सुखी है । जीवन में कपट बुद्धि नहीं रखनी चाहिए, किसी के साथ दगाबाजी वाला काम नहीं करना चाहिए । किसी को मन - वचन - वाणी से कभी भी दु:खी नहीं करना चाहिए .

शुद्धि साथे करेली बुद्धिजन फलदायी है ।

प्रत्येक मनुष्य को शुद्धि के साथ जीवन में वृद्धि करनी चाहिये । जमीन एक पानी एक, स्वाद एक परंतु बीज अलग - अळग है । गन्ना मीठा होता है, निंब्बू खट्टा होता है, मरचा तीखा होता है, करेला - कडवा होता है, ऐसा ही मनुष्य जीवन में होता है । माता-पिता एक होते हुये भी सन्तानों के गुण - धर्म अलग - अलग होते हैं । संस्कारी - सत्संगी, माता पिता की संतान उन्हीं की जैसी होती है ।

आज का युग प्रगति, विकास, बुद्धि का है । संशोधन, व्यवस्था, भोग विलासी जीवन का युग है । आज के युग का मनुष्य ग्रह के ऊपर अवश्य पहुंच गया है, लेकिन वह अपने पूर्वाग्रह को छोड़ नहीं सका । मनुष्य अवश्य अपार संपत्ति, धन वैभव प्राप्त किया, लेकिन उसका सद्मार्ग पर उपयोग करना आवश्यक नहीं समझा । सायद विवेक की कभी के कारण ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव

परम कृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवानने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के प्रांगणमें हजारो संत हरिभक्तों को श्री नरनारायणदेव फूल दोलोत्सव के प्रसंग पर अनेकोंबार रंग से रंगा था । ऐसा अलौकिक सुख श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव प्रसंग पर सभी संत भक्तों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से देखने मिला। संत-हरिभक्तों के साथ किंसुक के फूलो से बने गुलाबी रंग से प.पू. लालजीमहाराजश्रीने रंग खेला । थोडे समय के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भी रंग से सभी को भिगोदिया ।हजारो हरिभक्त इस रंग का दिव्य लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाये । ऐसे अलौकिक फूलदोलोत्सव के यजमान प.भ. डॉ. मनोजभाई ब्रह्मभट्ट, जय एन. ब्रह्मभट्ट परिवार था।

पू. महंत स्वामी स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से सभी आयोजन हरिचरण स्वामी (कलोल) स.गु. पूजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी को. जे.के. स्वामी योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत मंडलने धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त की थी।

(को. शा.नारायणमुनिदास)

जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजश्री का १९१ वां पाटोत्सव

परम कृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवानने नव महा मंदिरो का निर्माण कराकर उसमें स्वयं के स्वरुप को प्रतिष्ठित किया । जिसमें जेतलपुरधाम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में तथा धर्मकुल की प्रसन्नता के लिये फाल्गुन कृष्ण-८ ता. २१-३-१७ को श्री रेवती बलदवेजी हरिकृष्ण महाराज का १९१ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस उपलक्ष्य में ता. १८-३-१७ रविवार को महाविष्णुयाग तथा ता. २०-३-१७ को दोपहर में ३-०० बजे ठाकुरजी के महाभिषेक के लिये भव्य जलयात्रा का आयोजन किया गया था । जिस में गाँव की बहनें बड़ी संख्या में कलश तथा श्रीफल के साथ देव सरोवर से प्रसादी का जल लेकर मंदिरतक धुन कीर्तन-भजन करते हुये आई। रात्रि में सुखदेवभाई गढवी तथा साथियोंने सत्संग डायरा किया था।

ता. २१-३-१७ मंगलवार को प्रात: ४-३० बजे मंगला आरती उसके बाद ठाकुरजी का पूजन-षोडशोपचार अभिषेकादि कार्य पू. महंत स्वामी के हाथों तथा पुजारी स्वामी के हाथों संपन्न हुआ। इसके बाद प्रसादी के श्री राधाकृष्णदेव का अभिषेक किया गया था।

प्रासंगिक सभा में अनेक धामों से आये हुये संतो ने जेतलपुर के देवों का रसप्रद वर्णन किया था। पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी यजमान परिवार अ.नि.प.भ. गोकलदास शामलदास पटेल (लवारपुर) के पुत्र प.भ. किरीटभाई पटेल, प.भ. जय पटेल, प.भ. रजनीकांत पटेल, प.भ. जनकभाई पटेल का पुष्पहार से सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे।

२५००० जितने श्रद्धालु हरिभक्त प्रभु का प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे। समग्र आयोजन स.गु. स्वा. के.पी. स्वामीने बड़ी सहजता से की थी। (शा. भक्तिनंदनदास)

सर्वोपरि धाम छपैया श्री स्वामिनारायण मंदिर में कथा पारायण

परम कृपालु परमात्मा श्री घनश्याम महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गुरुप्रसाददासजी एवं आनंद स्वामी की प्रेरणा से कुहा गाँव के प.भ. विनयभाई मनुभाई पटेल के शुभ संकल्प से छपैया में कथा का आयोजन किया गया था। ता. ११-३-१७ से १५-३-१७ तक स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर स.गु. वासुदेवानंद वर्णि कृत श्रीमद् सत्संगिभूषण पंन्चाहन पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था । सभाका संचालन भक्ति स्वामीने किया था। कथा में आनेवाले सभी प्रसंग का यथावसर वर्णन किया गया था । श्री घनश्याम जन्मोत्सव, रामप्रतापजी महाराज का विवाह प्रसंग, घनश्याम महाराज का अभिषेक तथा अन्नकूट आरती दोपहर में १२ बजे के समय में की गई थीं। श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इसके साथ रासोत्सव भी किया गया था।

कथा पारायण प्रसंग पर देश विदेश से बहुत सारे हरिभक्त आये हुये थे। सां.यो. बहने भी आयी थई। अमदावाद, जेतलपुर, अंजली नारणपुरा, बापुनगर, सिद्धपुर, मकनसर, रतनपर, मूली, अयोध्या इत्यादि धामों से संत पधारे थे। यहाँ के महंत स्वामी की व्यवस्था अच्छी थी।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल छपैयाधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा २४वाँ पाटोत्सव

परम कृपालु श्री घनश्याम महाराजकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा माधवप्रसाददासजी तथा हरिजीवनदासजी की प्रेरणा से अ.नि. पटेल मंगलदास उमेदराम तथा गं.स्व. पोलीबहन मंगलदास पटेल परिवार कृते श्री प्रविणभाई तथा जगदीशभाई के यजमान पद पर सापावाडा मंदिर में विराजमान देवों का २४ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ । इस अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो के पूजन के यजमान श्री मूलजीभाई पटेल परिवार था । प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये कहा कि भगवान के प्रतिष्ठा का मुहुर्त मैं दूंगा ऐसा कह कर प्रसन्नता व्यक्त किये थे । (कोठारी श्री सापावाडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साचोदर अर्धशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. २२-२-१७ से ता. २६-२-१७ तक अर्धशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन की पंच दिनात्मक कथा का आयोजन किया गया था । इस के वक्ता चैतन्यस्वरुपदासजी थे । तीन दिन का विष्णुयाग का भी आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर स.गु. पी.पी. स्वामी, पू. ब्र. राजेश्वरानंदजी, पू. राम स्वामी इत्यादि संतोने प्रेरकप्रवचन किया था ।

(जयवल्लभ स्वामी ईडर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर थुरावास ३७ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का ३७ वाँ पाटोत्सव ता. २९-२-१७ को धूमधाम से किया गया था । इस प्रसंग पर महापूजा, ठाकुरजी का अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे । हरिभक्त पाटोत्सव का दर्शन करके धन्य हो गये ।

(कोठारश्री थुरावास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच - बापुनगर बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा तथा १२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणदासजी की प्रेरणा से तथा पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के मार्गदर्शन में २८-२-१७ से ५-३-१७ तक उत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण पोथीयात्रा, श्रीहरियाग, सांस्कृतिक कार्यक्रम, रक्तदान शिबिर इत्यादि कार्यक्रम तथा ता. ५-२ तथा १२-२ को ४०० तथा ६०० हरिभक्त एप्रोच मंदिर से कालुपुर मंदिर तक पदयात्रा तथा १९-२ को रैलीका आयोजन किया था । ता. २-३ को बहनों को दर्शन-आशीर्वाद का सुख प्रदान करने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । समग्र उत्सव के अन्तर्गत १२० जितने संत तथा ९० जितनी सां.यो. बहने पधारी थी ।

ता. ५-३-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से घनश्याम महाराजका अभिषेक, अन्नकूट आरती कथा तथा यज्ञ की पूर्णाहुति तथा नूतन मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से की गई थी । अन्त में सभी को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

महोत्सव के मुख्य यजमान गजेरा राजूभाई परसोतमभाई, कथा के मुख्य यजमान गं.स्व. काशीबहन अरजणभाई साचाणी तथा पाटोत्सव के यमजान धीरुभाई एच. खोखर परिवार था । सभा संचालन धर्मकिशोर स्वामीने किया था । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से काशीन्द्रा के भाइयों के तथा बहनों के मंदिर में विराजमान श्री स्वामिनारायण भगवान का पाटोत्सव ता. २२-३-१७ को धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर महिला मंडल के यमजान पद पर ठाकुरजी की महापूजा तथा भगवान का पूजन जेतलपुर के महंत स्वामी के शिष्य मंडल द्वारा किया गया था । बाद में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी, उन्हीं के हाथों ठाकुरजी की आरती गई थी । अंजली, जेतलपुर, मकनसर मंदिरो से आये हुये संत प्रवचन का लाभ दिये थे । (महंत स्वामी के.पी.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनर १७६ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में विराजमान श्री स्वामिनारायण भगवान का १७६ वाँ पाटोत्सव तथा बहनों के मंदिर में दूसरा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर शा. भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर त्रिदिनात्मक पारायण हुआ था । इस अवसर पर अनेक धामों से संत तथा सां.यो. बहने पधारी थी । ता. २५-३-१७ को ठाकुरजी का अभिषेक संतो द्वारा तथा बहनों के मंदिर में सां.यो. बहनो द्वारा अभिषेक किया गया था । पाटोत्सव के यजमान का सन्मान किया गया था । बाद में अन्नकूट की आरती का दर्शन एवं प्रसाद ग्रहण करके सभी धन्यता का अनुभव किये थे ।

(श्री नरनारायणयुवक मंडल - बालासिनोर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा २२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी तथा कोठंबा मंदिर की सेवा-पूजाकरने वाले माधव स्वामी की प्रेरणा से यहाँ का २२ वाँ पाटोत्सव ता. २६-२-१७ को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर जेतलपुर मंदिर के संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था। इस अवसर पर नारणपुरा, खारोल, लुणावाडा से संत पधारे थे। मोरबी से सां.यो. बहने भी पधारी थी। प.भ. रसीकभाई यजमान पद का लाभ लिये थे। अन्नकूट की आरती का दर्शन करके सभी धन्य होग ये। (श्री नरनारायण यु.मं. कोठंबा)

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर रडोदरा में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से रडोदरा में काष्ठ कलाकृति से बने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रतिष्ठा विधिस्वा. नौतमप्रकाशदासजी (वडताल) की प्रेरणा से यहाँ के हरिभक्तों द्वारा किया गया। इस उपलक्ष्य में श्रीजी स्वामी (हाथीजण) के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत कथा संपन्न हुई। खानदेश के निष्ठावाले भक्त ७० जितने हरिभक्त अखंड महामंत्र जप, प्रभातफेरी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये। इस के साथ ही श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश से पधारे हुये संतोने अपनी प्रेरकवाणी का लाभ दिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्राण प्रतिष्ठा की गई। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर की तथा यजमान की प्रसंशा करके आशीर्वाद प्रदान किया था। (कोठारीश्री रडोदरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया दशाब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से तथा घाटलोडिया के हरिभक्तों के सहयोग से ता. ७-३-१७ से ५-३-१७ तक दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस उपलक्ष्य में ता. १९-२-१७ को श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ करीब १०० जितने हरिभक्त पदयात्रा करके आये थे। मंदिर के सभा मंडप में ८-३० से १०-०० तक श्री स्वामिनमारायण महामंत्र की धुन की गई थी।

ता. १-३-१७ से ५-३-१७ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई। पारायण के यजमान श्री अरविंदभाई पटेल के निवास स्थान से पोथीयात्रा सायंकाल ४-३० बजे धुन-भजन करते हुये कथा स्थल तक पहुंची थी।

ता. २-३-१७ को बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। ता. २-३-१७ को प्रातः ८ से ११ बजे तक धुन तथा ता. ४-२-१७ को समूह महापूजा रखी गई थी। ५-३-१७ को प्रातः ७ बजे ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था। बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से अन्नकूट की आरती की गई थी।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा. दिव्यप्रकाशदासजी ने किया। महोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. नाथीबहन कालीदास पटेल परिवार था। यहाँ का ट्रस्टी मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। (प्रवीणभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. शा.स्वा. हरिस्वरुपासजी की प्रेरणा से एवं उन्हीं के शिष्य मंडल के मार्गदर्शन में अ.नि. नाथीबा कालीदास परिवार के सहयोग से ता. १९-२-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव मनाया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। धोलका के महंत स्वामी के शिष्य मंडल तथा प.भ. गांडाभाई नारणदास पटेल की सेवा सराहनीय थी। सभा संचालन अभय स्वामीने किया।

(योगेशकुमार)

श्री नरनारायणदेव बाल मंडल का जेतलपुरधाम यात्रा प्रवास

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडलने ता. १९-३-१७ रविवार को जेतलपुर धाम के दर्शन का आयोजन किया था। इस यात्रा में कथाकार शा. हरिप्रिय स्वामी तथा चैतन्यमुनि स्वामीने जेतलपुर धाम के श्रीहरि लीला प्रसंग को तथा स्थान के महत्व को समझाया था।

को. जे.के. स्वामी तथा मुनि स्वामीके मार्गदर्शन में यात्रा निकाली गई थी। जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामीने बालकों को प्रभु के प्रसाद (भोजन) की सुंदर व्यवस्था की थी।

(गोपालभाई मोदी - एडवोकेट)

लवारपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर २४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का २४ वाँ पाटोत्सव १६-३-१७ को संपन्न हुआ था।

२४ वें पाटोत्सव प्रसंग पर स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजी, छोटे पी.पी. स्वामी, छपैयाप्रसाद स्वामी, बालस्वरुप स्वामीने ठाकुरजी की आरती करके सभा में भगवान की लीलाओं को सुनाया था। (हार्दिक पटेल - लवारपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से आगामी ३० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

ता. ३०-३-१७ से ३-४-१७ तक आयोजन के उपलक्ष्य में ता. १३-३-१७ को छोटे पी.पी. स्वामी, पू. देव स्वामी, बालु स्वामी तथा गाँव के हरिभक्त उत्सव के उपक्रम में विजय स्तंभ का स्थापन किया था। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर देउसणा ४३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा गवैया स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का ४३ वाँ पाटोत्सव फाल्गुन कृष्ण-३ ता. १५-३-१७ को संपन्न किया गया, जिस में ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, सभा-कीर्तन इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे। इस प्रसंग पर गांधीनगर से महंत पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प.भ. अमृतभाई परिवार की सेवा तथा नटवरभाई, रमेशभाई, जयंतीभाई इत्यादिने सेवा का लाभ लिया था। अमदावाद, गांधीनगर, नारणघाट से संत पधारे थे। (कोठारीश्री देउसणा)

टोरडाधाम में कांकरिया रामबाग से पधारे हुये भक्तों द्वारा हनुमान चालीसा सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गोपोलानंद स्वामी के टोरडा गाँव में कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर से हरिभक्तों के द्वारा करीब १६ वर्ष से प्रति शनिवार को अलग अलग हरिभक्तों के घर हनुमान चालीसा का पाठ किया जाता है।

२५-३-१७ को कांकरिया हनुमान चालीसा मंडल द्वारा टोरडा मंदिर में हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था। स.गु. गोपालानंद स्वामी तथा दादा की प्रसन्नता प्राप्त किये थे।

यहाँ के महंत स्वामीने सभी के लिये अच्छी व्यवस्था की थी। हनुमान चालीसा के समय कितने लोगों को हनुमानजी के प्रत्यक्ष दर्शन का अनुभव हुआ था।

(नटुभाई पटेल - गामडीवाला)

माणेकपुर गाँव में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. गुरुप्रसाददासजी एवं आनंद स्वामी (कालुपुर) की प्रेरणा से माणेकपुर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, श्रीजी महिला मंडल तथा अन्य सभी हरिभक्तों के सहयोग से विदुरनीति सप्ताह पारायण शा. यज्ञप्रकाशदासजीके वक्तापद पर संपन्न हुई। सभा संचालन स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर)ने किया।

बहनो के आमंत्रण का मान रखने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। ता. १९-२-१७ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे तथा ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में कथा की पूर्णआहुति के बाद सभीको हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। अनेक धामो से संत पधारे थे। यज्ञप्रकाश स्वामी तथा मुक्त स्वरुप स्वामी की प्रेरणा से सातो दिन की अच्छी व्यवस्था की गई थी। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

न्यु राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रथम रंगोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १२-३-१७ को नवनिर्मित न्यु राणीप स्वामिनारायण मंदिर में प्रातः ९ से ९-३० तक धुलहटी का रंगोत्सव मनाया गया। नारायणघाट मंदिर के शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा कालुपुर से नीलकंठ स्वामी पधारकर श्री नरनारायणदेव के प्रादुर्भाव की कथा कहकर होलीकोत्सव का रहस्य समझाया था। २०० जितने भक्त रंगोत्सव में आये थे।

(ब्रिजेश पटेल श्री न.ना.देव यु. मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया ३३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. ४-३-१७ को यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का ३३ वाँ पाटोत्सव संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर भोजनप्रसाद के यजमान मगनजी अमथाजी चौहाण थे। समग्र आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा कोठारी महेन्द्रसिंहने किया था। (माधव स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली ३० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का ३३ वाँ पाटोत्सव प.भ. चेतनभाई ठक्कर तथा प.भ. मुकेशभाई ठक्कर के यजमान पद पर संपन्न हुआ। जेतलपुर के संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की गई थी। संतो की अमृतवाणी तथा देवदर्शन का लाभ लेकर सभी धन्य हो गये। (ठक्कर घनश्यामभाई)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर में दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली देश सरदार बाग शनाला रोड शिखरी मंदिर श्री स्वामिनारायण का दिव्य दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ. इस में स्वामी भक्तिनंदनदासजी तथा स्वा. विश्वविहारीदासजी के मार्गदर्शन में ता. ११ से १७ तक फरवरी में संपन्न हुआ। महोत्सव के प्रथम दिन कथा के मुख्य यजमान परिवार श्री शांतिलाल भगत के घर से पोथीयात्रा बड़े धूमधाम से निकली थी। जिस में करीब पांच हजार जितने स्त्री-पुरुष थे, इससे महोत्सव की भव्यता तथा दीव्यताका अनुभव हो रहा था।

श्री स्वामिनारायण नगर ब्रह्मानंद सभा मंडप तथा महोत्सव स्थल के विशाल प्रांगण में पू. महंत शा. स्वामी श्रीहरिकृष्णदासजी स्वामी, पू. ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी महंत श्री श्यामसुंदरदासजी, महंतश्री प्रेमदासजी, भक्तिहरि स्वामी तथा

अन्यत्र से आये हुये संतो की उपस्थिति में दीपप्रागट्य के साथ शुभारंभ किया गया था । इस अवसर पर संप्रदाय के मूर्धन्य विद्वान श्रीजी स्वामी (हाथीजण) तथा शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी (मोरबी) के वक्तापद पर कथा संपन्न हुई ।

कथा के अन्तर्गत आनेवाले सभी प्रसंग बड़े धूमधाम से मनाया गया था ।

महोत्सव के अन्तर्गत सर्वरोग निदान केम्प, ब्लड डोनेशन केम्प, हास्पिटल में फ्रूट वितरण, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, वृक्षारोपण, व्यसनमुक्ति इत्यादि कार्यक्रम भी किये गये थे ।

सात दिन के अलग-अलग कार्यक्रम किये गये थे । जिस में महामंत्र धून, २१ कुंडी श्रीहरियाग, श्री महाविष्णुयाग, महिला मंच (जिस में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर सभी महिलाओं को दर्शन देना तथा मंत्रदान, कंठी धारण इत्यादि कार्य) द्वारा अन्य भी कार्य किये गये थे । उत्सव के अवसर पर संप्रदाय के मूर्धन्य विद्वान संत अपने व्याख्यान दिये जिस में पू. बड़े पी.पी. स्वामी, पू. शा. कृष्णस्वरुपदासजी (भुज) धर्मजीवनदास स्वामी (मोरबी), सूर्यप्रकाश स्वामी (वांकानेर) इत्यादि संतोने अपनी वाणी का लाभ दिये थे ।

प्रतिदिन रात्रि कार्यक्रम किये गये थे जिस में - रास उत्सव संदीप भगत (हाथीजण तथा आरकेष्ट्रा ग्रूप द्वारा कीर्तन, धीरुभाई हास्य कलाकार, मायाभाई आहीर लोकसाहित्य कार, श्री दिनेशभाई वघासिया (गायक कलाकार) इत्यादि उपस्थित होकर सभी को आनंदित किये थे । महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीजी सिरामिक ग्रुप के श्री हरिभाई, श्री तुलसीभाई, श्री जीवराजभाई, श्री हीराभाई कथा के मुख्य यजमान श्री शांतिलाल भगत परिवार थे । अंजार - गांधीधाम - मोरबी - मच्छुकांठा - झालावाड - हलवद - हालार विस्तार के हरिभक्त तथा बहनों द्वारा सभी प्रकार की व्यवस्था की गई थी ।

इस उत्सव में प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री विजयभाई रुपाणी उपस्थित थे । संप्रदाय के सभी धर्म स्थानों से संत पधारे थे ।

इस उत्सव को सफल बनाने के लिये पीछे एक वर्ष से मूली देश के सभी संत गाँव-गाँव घूमकर सत्संग का प्रचार किये थे ।

इसके अलांवा सत्संग साहित्य में मूली प्रदेश में श्रीहरि की लीला का दमदार ग्रंथ का प्रथमवार प्रकाश, वचनामृत रसकुंभ, शिक्षापत्री कीर्तन की सीडी इत्यादि का विमोचन पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमल द्वारा किया गया था । इस अवसर पर भावि आचार्य महाराजश्री संत पार्षदों के साथ पधारकर सभी को दर्शन का लाभ दिये तथा यजमानों को शाल ओढाकर सन्मानित भी किये

महोत्सव की पूर्णाहुति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर अपने करकमलों से महाभिषेक अन्नकूट आरती इत्यादि कार्य संपन्न किये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में प्रसन्नता व्यक्त करते हुये सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

अंत में पू. महाराजश्रीने महंत शा. भक्तिनंदनदासजी के परिश्रम की खूब प्रसंशा करके आशीर्वाद दिये थे । महोत्सव के माध्यम से मूली प्रदेश, मच्छुकांठा, झालावाड, हलवद, हालार के साथ सम्पूर्ण मोरबी शहर में संप्रदाय की सुगंधफैल रही है ऐसा कहकर संतोष व्यक्त किये थे । (मोरबी मंदिर द्वारा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवाधाम १३२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चराडवा मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज का १३२ वाँ पाटोत्सव महंत शा.स्वा. उत्तमप्रियदासजी तथा ब्रह्मविहारीदासजी की प्रेरणा से जेतपुर के सुरेलिया परिवार तथा चराडवा गाँव के सभी हरिभक्तों के सहयोग से फाल्गुन शुक्ल-२ को ठाकुरजी का महाभिषेक अन्नकूट, ध्वजारोहण, तथा प्रासंगिक कथा का आयोजन भी किया गया था । जिसके वक्ता ज्ञानवल्लभदासजी थे । सभी भक्त दर्शन का तथा प्रसाद का लाभ लिये थे । श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । (श्री न.ना.यु.मं. चराडवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सां.यो. शांताबा, रंजनबा, सां.यो. हंसाबा की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी का १०१ तथा १८ वाँ पाटोत्सव ता. ९-२-१७ को धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर सुरेन्द्रनगर के संत ठाकुरजी का अभिषेक-अन्नकूट आरती (पुरुष-महिला मंदिर में) तथा कथा का लाभ सभी को मिला था । पाटडी तथा अगल बगल के गाँवो से हरिभक्त आकर अलौकिक लाभ लिये थे ।

(कोठारी - नारणसिंह परमार - पाटडी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा तीसरा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा का तीसरा वार्षिक पाटोत्सव फाल्गुन कृष्ण-२ ता. १४-३-१७ को धूमधाम से मनाया गया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद में भेंट सौगात, रसोई के लिये संपर्क मो. नं. ९०९९०९५२००१

इस प्रसंग पर ठाकुरजी का अन्नकूट, होमात्मक समूह महापूजा, कथा इत्यादि कार्यक्रम सुरेन्द्रनगर मंदिर के स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, पू. श्रीजी स्वामी (हाथीजण), पू. शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली) इत्यादि संतो द्वारा किया गया था । सुरेन्द्रनगर से सांख्ययोगी बहनें भी पधारी थी ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के पुजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी तथा नीलकंठ स्वामी की प्रेरणा से शिकागो मंदिर में शिवरात्री के अवसर पर समूह महापूजा राकेशभाई पटेल के यजमान पद पर हुई थी । पूजा विधिबिपीनभाई दवे ने कराई थी । अमदावाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव के दिन पूजा-आरती की गई थी । स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (बायरन) ने ता. १-३ से ५-३-१७ तक पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रन्थ की कथा की थी । जिसके मुख्य यजमान सविताबहन छोटालाल पटेल तथा सह यजमान ठक्कर परिवार था । घुलहटी - होली - फूलदोलोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया था ।

ता. १७-३-१७ से ता. १९-३-१७ तक आई.इस.एस.ओ. की चौथी कोन्फरन्स प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर हुई थी । जिस में देश-विदेश के डिरेक्टर्स तथा युवक मंडल उपस्थित थे ।

युरोप, केनेडा, ओस्ट्रेलीया, न्युजीलेन्ड इत्यादि देशेम से तथा भारत से संत मंडल में से जेतलपुर से शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी, नेशविल अमेरिका से सत्यस्वरुप स्वामी, कांकरीया नाथद्वारा के मंहत स्वा. धर्मस्वरुपदासजी, शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी संत पधारे थे ।

१८ मार्च को पू. पी.पी. स्वामीने सर्व प्रथम शिकागो मंदिर द्वारा अपने अन्य नव मंदिरों के आर्थिक सहयोग की प्रसंशा की थी । बाद में प.पू. महाराजश्रीने तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने शिकागो मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में हार्दिक आशीर्वाद दिया था । न्युजीलेन्ड तथा ओकलेन्ड के श्री नरनारायणदेव देश के निष्ठावाले डॉ. कांतिभाई पटेल शिकागो मंदिर की धार्मिक प्रवृत्ति देखकर खूब प्रभावित हुये थे ।

यहाँ के संत मंडल निष्ठावान हरिभक्त समुदाय, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रयास की प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने प्रसंशा की थी ।

(वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर फूल दोलोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कोलोनिया मंदिर के महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी तथा अयोध्या मंदिर के पार्षद मूलजी भगत, पारसीप मंदिर के महंत अभिषेक स्वामी एलनटाउन मंदिर के महंत धर्मस्वरुप स्वामी इत्यादि संत तथा हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में ११ मार्च को श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

धुन-भजन-कीर्तन के बाद पू. महंत स्वामी ने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था । इस अवसर पर भगवान को फूलों से सुसज्जित किया गया था । यजमानो के सन्मान के बाद जनमंगल पाठ, संध्या आरती तथा महाप्रसाद का भी आयोजन किया गया था । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन फूलदोलोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी भक्तिनन्दनदासजी, ज्ञानजीवनदासजी, धर्मविहारीदासजी तथा पार्षद नरेन्द्र भगत इत्यादि संत मंडल तथा विशाल संख्या में हरिभक्तोंने फाल्गुन शुक्ल-१५ रविवार के सायंकाल होली पूजन तथा फाल्गुन कृष्ण-१ को श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव मनाया गया था । ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया गया था । महंत श्री दिव्यप्रकाश स्वामीने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था । हजारों हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे ।

(प्रवीणभाई शाह)

श्रीहरिએ સ્વયં પ્રસ્થાપિત કરેલ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર ધોળકા
શ્રી મોરલી મનોહર દેવ હરિકૃષ્ણ મહારાજનો
આગામી પાટોત્સવ વૈશાખ વદ-૫ મંગળવાર
તા. ૧૬-૫-૨૦૧૭ ના રોજ ધામધૂમથી ઉજવાશે.

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर वार्षिक
पाटोत्सव जेठ सुद-९ ता. ३-६-२०१७
शनिवार के दिन धूमधाम से होगा ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) घाटलोडिया (अमदावाद) मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी के अन्नकूट की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) कांकरीया मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ब्रह्मभोजन के निमित्त प्रासंगिक सभा में आशीर्वचन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री (३) माणेकपुर गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर शाक का वघार करते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री ।(४) कोठंबा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन । (५) छपैया मंदिर में आयोजित सत्संगिभूषण पारायण प्रसंग पर वक्ता श्री तथा अन्य महानुभाव संत-महंत ।(६) सोनारडा (दहेगाँव) में आयोजित रात्री पारायण के वक्ता श्री चैतन्य स्वामी का व्यास पूजन करते हुये अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा इस प्रसंग पर आयोजित शाकोत्सव का लाभ लेते हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) कालुपुर मंदिर में आयोजित फूलदोलोत्सव के यजमान परिवार पूजाविधिकरते हुये। (२) शिकागो मंदिर में आई.एस.एस.ओ. के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री।

सूचना : अब से श्री नरनारायणदेव के मंदिर के प्रसंगो की पत्रिका या बेनर कालुपुर मंदिर में मात्र डिजिटल फार्म में रखाजायेगा। इसलिये आप sntemple@gmail.com अथवा watsup No. 9099095200 पर अपनी डिझाईन प्रेषित करे - आज्ञा से

Praful Kharsani